श्रीपरमात्मने नमः ।

पंडित कुंजविहारीलाल जैन शास्त्री "वत्सल"

कृत

गद्य-पद्यमयी स्टेज पर खेलने योग्य

मणिभद्र-नाटक ।

प्रकाशक—

पंडित कुंजविहारीलाल जैन शास्त्री.

प्रथमवार १००० | मिती मगसिर शुक्ला २ | वीर सम्वत् २४५३ | विक्रम सम्वत् १९८३ | मूल्य ॥)

Printed and Published by

Srilal Jain

at the JAIN SIDDHANT PRAKASHAK PRESS,

9, Visvakosha Lane, Baghbazar, Calcutta.

ग्रंथ-कर्ताके हार्दिक भाव।

लीजिये पाठक महानुभाव! यह प्राथमिक भेंट आपके सामने 'मणिभद्र-नाटक' उपस्थित है। चाहे इसे स्टेजपर खेलिये, चाहें यों ही पढ़िये, यह आपकी रुचि पर निर्भर है। वर्तमानमें इसका असर जनतापर विशेष पड़ रहा है यही विचारकर मैंने कुछेक नाटक एवं ड्रामा तयार किये हैं, जिनमें प्रायः सप्त व्यसनादिका निषेध बड़ी दिलचस्पीके साथ किया गया है। यों तो नाटकोंकी समाजमें कमी नहीं है मगर ऐसे बहुत कम दृश्य हैं जो सप्त व्यसनादिके प्रत्यक्ष ज्वलन्त दृष्टान्त हों।

इस पुस्तकमें मैं यथासाध्य रोचकता, विषयकी स्पष्टता आदि लाया हूं मगर मैं यह नहीं कह सकता कि मेरी इस ढंगकी शैली जनताको रुचिकर ही होगी। तथापि मैं आशा करता हूं कि विषय उपयोगी जानकर इसका भी समाज आदर करनेमें कमी न रक्खेगी, वह इससे अवश्य फायदा उठावेगी।

जिन महाशयोंकी प्रेरणासे मैंने इसे निर्माण किया है उन्हें मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं क्योंकि वे प्रेरणा न करते तो मैं आलसी कभी भी इस रूपमे समाजकी सेवा नहीं कर सकता था।

अंतमें मेरा निवेदन यह है कि इस विषयमें मेरी अज्ञानता आदिसे अनेक त्रुटियां रह गई होंगी परन्तु वाचक वृंद, उनपर विशेष ध्यान न देकर मुझे उत्साहित करेंगे ताकि मैं उनके सामने पुनः भी सर्वांग सुन्दर पुस्तकें भेंट कर सकूं। शुभं भूयात्

समाजका दास

कुंजविहारीलाल जैन 'वत्सल'

प्रधानाध्यापक—दि०जैनपाठशाला, हजारीबाग.

नाटकके पात्र।

मणिभद्र ......सुभद्र सेठका पुत्र

कर्मकार ......मणिभद्रका गुमास्ता

दिनेश......मणिभद्रका मित्र

यमदंड......अनङ्गतिलकाका नौकर

ज्ञानानंद......ब्रह्मचारी

कालिया ...मिहतर (भंगी)

कूरा... मिहतर

जज, वकील, पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, सिपाई, द्वारपाल और दुकानदार आदि।

नाटककी पात्रायें।

चन्द्रप्रभा......मणिभद्रकी स्त्री

अनंगतिलका.... वेश्या

पुष्पतिलका......अनंगतिलकाकी लड़की

सुभद्रा......मणिभद्रकी मा

निपुणा दूती और परियां

मणिभद्र नाटक।

प्रथमांक

(परियोंका मंगल गान करनेके लिये आना)

परियां—श्री अजित जिनवरा, सब कम क्षयकरा,
आज काज साधि विघ्न नाशि मनहरा ॥ टेक ॥
आज खुशीका समय सुभग सुंदर सुखदायक है जिनराज।
मोद बढ़ाऊं हर्ष मनाऊं गाऊं गुण तुव हे महाराज ॥
मोद मन भरा ॥ श्री, अजित जिनवरा० ॥
शील शिरोमणि है दुनियांमें उसको अपनाया तुम आज।
व्यसन सभी दुखदाई जगमें उन्हें भगा साधा निजकाज ॥
स्वच्छ गुरुवरा ॥ श्री अजित जिनवरा० ॥
सम्यग्ज्ञान चरित्र पूज्य उनको तुम पाय हुये सिरताज।
मिथ्या चारित्रादि हेय लखि छोड़ि दिये वैभाविक साज ॥
लखि परंपरा ॥ श्री अजित जिनवरा० ॥
कुशील नाशक नाटक खेलें दृश्य सुरस सुंदर सुखदाय।
सुनकर नर नारी तुम छोड़ो 'कुंज' जान भारी दुख दाय ॥
ज्ञान उरधरा ॥ श्री अजित जिनवरा० ॥

(गाते गाते परियोंका चला जाना)

अंक पहिला—सीन पहिला।

स्थान—सेठ मणिभद्रका महल।

(मणिभद्र स्वाध्याय कर रहा है, सामने उसकी स्त्री चन्द्रप्रभा शृंगार किये हाथमें ताम्बूलादि सामग्री लिये खड़ी है)

चन्द्रप्रभा—(स्वगत) क्या करूं? स्वामी तो कुछ समझते ही नहीं, रात्रि दिन शास्त्रस्वाध्यायमें ही लगे रहते हैं। सिवाय पुस्तकोंके पन्ना पलटनेके दूसरा तो ध्यान ही नहीं है। (प्रगट स्वामीकी तरफ) हे स्वामिन्! कहिये। क्या आज्ञा है? दासी आपके सामने खड़ी है।

मणिभद्र—(ऊपरको निगाह उठाकर) भद्रे। तुम्हे क्या चाहिये?

चन्द्रप्रभा—(शरीरकी आकृति दिखाकर)

> नाथ! मैं क्या चाहती हूं, आप क्या नहिं जानते।
> ऊपरी रॅग, ढंगसे क्या व्यथा नहिं पहिचानते॥
> क्या कभी कोई 'वता सक्ती दरद दिलका कभी।
> हो रहा जो कष्ट भारी मदन-मर्दनका अभी॥

क्या मेरी शरीरकी चेष्टा आप नहीं देख रहे हो?

मणिभद्र—क्या तेरे शरीरमें कुछ वेदना है?

चन्द्रप्रभा—हाँ नाथ! वेदना है। क्या आप मेरी इस वेदनाको नहीं मिटावेंगे?

अग्निभट्ट—सारे जीवोंको सताती वेदना दुखदायिनी।
क्या अनोखी बात ये है प्रगट दीखै कामिनी॥
शास्त्रके सुनने-सुनानेसे सभी दुख नाश हों।
वेदना राहित्य होकर सिद्धपदका प्राप्त हों॥

तुम शास्त्राध्ययन करो, इसी शास्त्रस्वाध्यायसे तुम्हारी सारी वेदना दूर हो जायगी।

चन्द्रप्रभा—नाथ! तुमरी बातका उत्तर मुझे सूझै नहीं।।
किस कर्मका है उदय यह समझमें आता नहीं॥
है बड़ा आश्चर्य यह बचसे कहा जाता नहीं।
क्या करूं कुछ काममें भी मन मेरा लगता नहीं।

क्या करूं? कर्मोदय अनिवार्य है।

अग्निभट्ट—किस कर्मका उदय कहती क्या तुझे मालुम नहीं।
कर्म आठोंका उदय है ये तुझे मालुम नहीं।।
शास्त्रकी ज्ञाता नहीं तू इसीसे मालुम नहीं॥
शास्त्रका स्वाध्याय करके दुःख क्यों मेटे नहीं॥

आज कई दिनोंसे ही क्यों, अनादिकालसे ही इस जीवकी ऐसी दशा हो रही है। क्या तू नहीं जानती? यदि तेरी इच्छा हो तो बताऊं कि इस कर्मोदयमें संसारी जीवकी क्या दशा होती है।

चन्द्रप्रभा—क्या नाथ! शास्त्रस्वाध्यायके अतिरिक्त मेरी वेदना मिटनेका कोई दूसरा उपाय नहीं है? क्या आप समर्थवान होकर भी मेरी वेदनाको नहीं मेट सकते? क्या मुझे यह दुःख आजन्म सहन करना होगा? क्या मुझ दुखियाकी तरफ

आपका चित्त न जायगा ? प्राणनाथ ! मेरा दुःख मेटनेको आपही समर्थ हैं।

मणिभद्र—उपाय तो है मगर वह बहुत ऊंचे दर्जेका है। मैं समर्थवान तो नहीं हूं मगर किसी अपेक्षा समर्थवान भी माननेमें कोई विशेष आपत्ति नहीं है। अच्छा, तू बैठ, मैं तेरी वेदना मेटनेका उपाय करता हूं।

चन्द्रप्रभा—(सामने बैठ जाती है और अनेक हाव भाव कटाक्षादि दिखाती है) प्राणनाथ !.....

मणिभद्र—(बात काट कर) यह क्या ! तू शरीर ऐसा वैसा क्यों कर रही है ? तेरे नेत्र ऐसे चलायमान क्यों दीख पड़ते हैं ? आज इस तरह अकड़ाइयां क्यों ले रही है ?

चन्द्रप्रभा—(शरीरको ठीक करके) नहीं स्वामी ! यह शरीर ऐसे ही हो गया होगा, वेदनाका प्रकोप अनिवार्य है। लीजिये, पान खाइये। (पानका बीड़ा देती है)

मणिभद्र—शास्त्र स्वाध्यायके समय क्या यह चीज खानी चाहिये।

चन्द्रप्रभा—(स्वगत) क्या इनका अजब ढंग है। रात्रिके दश बजेका समय है, इस वक्त दुनियां आनंद लूट रही है। अफशोश ! आज मुझे समझाते २ बहुत दिन हो गये लेकिन इनका पत्थरसा हृदय अभी तक नहीं पसीजा ! क्या करूं मेरा सारा प्रयत्न विफल जाता है। अवश्य ही मेरे कोई प्रबलकर्मका उदय है, अन्यथा ऐसी दशा आज क्यों होती, न मालूम इनका ऐसा ढंग

कब तक बना रहेगा। (प्रगट सेजकी तरफ इशारा करके) प्राण-नाथ! चलिये! अन्दर सेज तयार है, आराम कीजिये और मेरी मनोकामनाको भी पूरी कीजिये मुझे आप कितने दिनोंसे भुला रहे हैं। नाथ! मेरी तरफ नहीं देखते कि आपकी आश्रिताकी क्या दशा हो रही है। मैं अपने निजी दुखको कहां तक कहूं। आप उठिये और चलिये, मुझे क्यों विशेष तरसाते हो?

मणिभद्र—क्यों? अभी तो संध्याही हुई है। बैठो, जरा स्वाध्याय और कर लें बाद सोने चलेंगे। (फिर स्वाध्याय करने लगता है)

चन्द्रप्रभा—(स्वगत) अर्द्ध रात्रीके समय भी सांझ इनको भासती

हाय रे! दुष्कर्म! तव गति समझमें नहिं आवती॥

दुख दिया मुझको तुझे कुछ तरस भी आया नहीं।

निमित होते हू किसीने दुःख क्या पाया कहीं॥,

क्या करूं? स्वामी तो मेरी चेष्टाओंसे असली बात समझते नहीं और मैं भी इनसे साफ २ किन शब्दोंमें कहूं, जिन शब्दोंमें मैं कहती हूं उन शब्दोंका ये अर्थ ही दूसरा लगा लेते हैं। मैं बड़ी परेशान हूं। देखो, स्त्रीकी लज्जा भी कितनी बलिष्ट है, जो अपने पतिसे साफ साफ कहनेमें हिचकती है। तो क्या अब मैं निर्लज्ज होकर ही सब बातें इनसे कह दूं मगर इन्होंने फिर भी कहीं "इको यणचि" लगाकर उसका अर्थ बदल दिया तब मैं क्या करूंगी। तथापि कहूं तो सही, देखूं इस अन्तिम उपायका भी क्या असर होता है? (प्रगट—स्वामीसे) प्रियवर! रात्रि बहुत हो गई है। इस समय सारी दुनियां आराम कर रही है,

आप भी चलें और मुझ संतप्तहृदयाको अपने अपूर्व प्रेमामृतसे शीतल करें। नाथ! यह आराम करनेका समय है।

मणिभद्र—तो यहां चलकर ही क्या होगा। मैं तुझे यहींपर ऐसा उपदेशामृत पिलाऊंगा जिससे तेरा जलता हुआ हृदय शीतल हो जायगा। उसके सुननेसे तुझे वह आनन्द प्राप्त होगा जो वचनोंके अगोचर है। क्या सचमुच रात्रि अधिक हो गई है। घड़ीमें क्या बजा है?

चन्द्रप्रभा—(स्वगत) मैं तो प्रथम ही जानती थी कि इसका भी ये अर्थ बदल देंगे, वही हुआ। अस्तु! तीव्र कर्मोदयके समक्ष सारे प्रयत्न विफल हो जाते हैं। (प्रगट, स्वामीसे) हां नाथ! रात्रि बहुत हो गई है, घड़ीमें ग्यारहसे ऊपर हो गया है, देखिये (घड़ी दिखाती है)

मणिभद्र—ग्यारहसे ऊपर हो गया! तब चलो, आखिर तो तुम्हारी बात माननी ही पड़ी (दोनों उठकर चल देते हैं, मणिभद्र सेज पर सो जाता है और चन्द्रप्रभा सामने खड़ी रहती है)

मणिभद्र—(सेजपर पड़ा पड़ा) तुम भी आराम करो और यदि इच्छा हो तो धर्मोपदेश सुनो। क्या शास्त्र सुननेकी अभिलाषा है?

चन्द्रप्रभा—नहीं नाथ! नींद नहीं आती?

मणिभद्र—क्यों?

चन्द्रप्रभा—मालूम नहीं। जी उड़ रहा है, मनमें कई प्रकारके भंवर जाल पड़ रहे हैं, मेरा चित्त उचट गया है। नाथ!

मेरा चित्त कोई काम करनेमें नहीं लगता। क्या करूं ? चित्तको बहुत सम्भालती हूं मगर हाथसे निकल ही जाता है।

मणिभद्र—(बैठकर) क्या कहा ? जी उड़ रहा है, सो तो ठीक ही है, जी सभी संसारी जीवोंका उड़ता रहता है। इस मनका चल विचल होना ही तो दुःख है। तथापि यह चंचल मन शास्त्ररूपी सांकलोंसे बांधा जा सकता है। क्या स्वाध्याय करूं ? तुझे और उपदेश सुनाऊं ? मैं ठीक कहता हूं कि तेरा चित्त शास्त्र स्वाध्याय करने या सुननेसे ठीक ठिकाने पर आ जायगा और आत्मतत्वमें इतनी रुचि बढ़ जायगी कि चित्त फिर कहीं भी चलायमान न होगा। यदि उपदेश सुनना हो तो बैठ जा और सुन।

चन्द्रप्रभा—सुन लिया उपदेश, स्वामी! अब नहीं दरकार है।

करो तुम आराम मेरा कर्म ही करतार है॥
भाग्य मेरा है नहीं अरु नहिं मेरा अधिकार है।
कर्म जबतक उदयमें है तब तलक मक्षार है॥

मेरा ऐसा भाग्य कहां है जो आत्मतत्वका विचार कर सकूं ? आप लेट जाये।

मणिभद्र—तब तू क्यों खड़ी है ? तू भी लेट जा और आराम कर, इस तरह खड़े रहनेसे क्या लाभ होगा ?

चन्द्रप्रभा—प्राणेश्वर ! मैं भी पड़ रहूंगी, आप आराम कीजिये (मणिभद्र लेट जाता है। चन्द्रप्रभा बैठकर मणिभद्रके पग दाबती है और वह थोड़ी ही देरमें सो जाता है मगर चन्द्रप्रभा को नींद नहीं आती यह काम पीड़ित हो बोलती है)

गाना चन्द्रप्रभाका।

मेरा सइयां विरस रस भयां जुबन हुलसइयां तरस रही जान।
काहे सइयां मुझे तरसयां रे बहु कलपइयां न उतरी जवान ॥टेक॥

शेर—अब मेरे से ये दुःख सहा ही नहि जाता।
मेरा दिल उमग उमग जोबन से भर आता ॥
किसको दिखाऊं दरद कहने मे नहि आता।
क्यों दुख दिखाय मुझे कर्म आज तरसाता ॥
हाय! सइयां पडी दुख पइयां मैं बहु तड़फइयां तुम्हें नहि ध्यान ॥
मेरा सइयां० ॥ १ ॥

शेर—तड़फ तड़फ रात्रि दिन को जु बिताती हूं मैं।
बहुत दिनसे अब तलक प्रेम दिखाती हूं मैं ॥
विरह आगि में निज दिलको जलाती हूं मैं।
कर्मवैरी से कुछ नहि पेस पाती हूं मैं ॥
क्या करू सइयां पड़ी विकलयां जुवन मुरझयां निकल रही
जान ॥ मेरा सइयां० ॥ २ ॥

(चन्द्रप्रभा आहट पाकर गाना बंद कर देती है,
अपने सामने सासु गुणमद्राको देख लज्जित
हो मुख नीचा कर लेती है)

गुणभद्रा—(खडे हु हुवे) क्या बहू आज आराम नहीं करती!
रात्रिके बारह बजे तक तू यों ही बैठी रहती है। सो जा बेटी,
रात बहुत हो गई है।

चन्द्रप्रभा—(नम्रतासे) हा सासू जी । सो रहूंगी, आप क्यों तकलीफ उठाती हैं ! मुझे नींद नहीं आती इसी वास्ते बैठी हू ।

गुणभद्रा—(आह खींचकर)

क्या करूं बेटी तेरी ये है दशा बहु दुख भरी।
देखकर तेरी अवस्था फ़टती छाती मरी॥
आंखसे आंसू बरसते दुख सहा जाता नहीं।
क्या करूं बेटी मेरी कुछ वस मेरा चलता नहीं॥

जा जा बेटी। तू समझदार होकर ऐसा क्या करती है

(स्वगत) क्या करे ए भी बिचारी दुःख भारी सह रही।
पांच वर्षोंसे कभी एक दिन सुखारी नहिं रही॥
दुःख जो इसको सतावे जान का सका उसे।
वेदना है भीतरी उसको दिखावे ये किसे॥

क्या करूं, मैं खुद परेशान हूं, मगर इसे कोई भी शिक्षा नहीं लगती। (प्रगट) मैं कल एक और उपाय करूंगी। देखूं उसका इसके ऊपर क्या असर पड़ता है। रंज मत करे, क्या दु:खके दिन हमेशा थोड़े ही रहते हैं।

चन्द्रप्रभा—जाओ सासू जी! आराम करो, मैं सो रहती हूं। योंही कभी २ वक देती हूं मेरे इस वकने पर आप ख्याल न किया करें। कर्म फल भोक्तव्य है उसे कौन निवारण कर सकता है। (सुनकर गुणभद्रा विशेष नहीं ठहरती यह आंखोंसे अश्रुपात करती चली जाती है। चन्द्रप्रभा भी एक तरफ सो रहती है)

[यवनिका पतन]

(नाचने वा गानेवालीका प्रवेश पर्देके बाहर स्टेज पर)

(तेरो सूरत है यी तर्जमें)

जो नहीं व्यवहार माने घर की रीतो न जाने उसको करतूत सारी वृथा हो जाय॥

याते कर्तव्य जानो अपनो २ न तानो देखो दुनियां की हालत यहां तुम आय॥ टेक॥

करते सागर की सैर रखते मच्छों से वैर कैसे होंगे सुखारी अनारी वु भाय॥ १॥ पहिले सक्तो पिछानो पीछे आरंभ ठानो नहि तो होवे दुखारी समय को पाय॥ २॥ घर की शिक्षा न पाई तप की सोवो न आई ऐसे जीवों की थिरता न थिरता कहाय॥ ३॥ चारो जैसा भी रंग करो वैसा ही ढंग कहो मानो कहै 'कुंज' मोका मिलाय॥ ४॥

(गानेवालीका गाते २ चले जाना।)

अंक पहिला–सीन दूसरा।

स्थान–अनंगतिलका वेश्याका मकान।

अनंगतिलका अपनी परम सुन्दरी पुष्पतिलका लड़कीको गाना और वशीकरणादिके प्रयोग सिखा रही है।

अनङ्गतिलका—(पुष्पतिलका से) बेटी ! सीखे बैठ और अपना । पेशा है उसकी शिक्षा प्राप्त कर (उस्तादसे) अजी उस्ताद

जो ! इसे अच्छी तरह सिखाइयेगा, गानेमें हावभाव और कटाक्षादिमें कमी न रखियेगा।

उस्ताद—ऐसा ही होगा आपकी इस लड़कीको मैं हरएक विषयमें अद्वितीय कर दूंगा, किसी भी प्रकार कसर न रक्खूंगा।

अनंग०—मैं आपसे विशेष क्या कहूं, यह आप हीकी लड़की है आप जैसा जाने सिखाइयेगा।

उस्ताद—आप क्यों फिक्र करती हैं। मैं इस आपकी लड़कीको चन्द रोजोंमें ही ऐसा बना दूंगा जिसके समान दूसरी न मिलगी।

अनंग०—मुझे भी ऐसी ही उम्मीद है (पुष्पतिलकासे) सीधे बैठ और उस्तादको बंदगी करके विद्या सीख।

उस्ताद—(पुष्पतिलकाके ठीक बैठ जाने पर) मेरे सामने देख और मैं जैसे बोलूं तू भी वैसे ही बोल। हां कह, सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सा (पुष्पतिलका ऐसा ही कहती है)

नि, ध, प, म, ग, रे, सा (पुष्पतिलका भी यही कहती है)

सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनी, धनीसा।

(पुष्पतिलका भी यही बोलती है)

सानिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा,

(पुष्प० भी कहती है)

वारी जाऊं रे सांवरिया तुम पर वारना रे॥

(पुष्प० भी इसी प्रकार कहती है)

वारना रे, तुम पर वारना रे, वारी जाऊं रे सांवरिया तुम पर वारना रे। (लड़की भी०)

तन मन धन सब तुम पर वारूं। (लड़की भी०)
घर दर जर सब तुम पर जारूं। (लड़की यही बोलती है)
कब तक कातिल बनकर खञ्जर मारना रे, खञ्जर मारना रे,
खञ्जर मारना रे, वारी जाऊं रे साँवरिया तुम पर वारना रे।
(लड़की भी यही बोलती है)

उस्ताद—(अनग तिलकासे) लीजिये हुजूर! आपकी लड़की चन्दरोजमें ही गाना आदि सब सीख गई, आप परीक्षा करके देख लीजिये।

अनंगति०—आपको मैं धन्यवाद देती हूं और आपकी बुद्धि एवं कार्यकुशलता पर कुरबान होती हूं, क्योंकि आपने इसे अल्पसमयमें ही इतना होशियार कर दिया। अच्छा एकाद गाना तो इससे गवाइये।

उस्ताद—(पुष्पतिलकासे) एक अच्छा गाना गाओ और अपने हुनरको दिखाओ।

पुष्पति०—(होंड बैठकर) गाना गाती है।

प्रभु तुम्हारी भक्ति में दिल आज मेरा लग गया।
तेरी सूरत देखते ही अघ अँधेरा मिट गया॥ टेक॥
ज्ञान का दीपक जला अरु मोह सारा मिट गया।
सुन तेरा उपदेश स्वामी मन निसंशय होगया॥ १॥
उपल ज्युं चक खींचती ज्यों मेरा चित त्यों खिचगया।
जग की ये सारी दशा लखि मन हमारा फट गया॥२॥
प्रेम तेरा हो अटल है जिसके दिल में लग गया॥
वह हमेशा के लिये तुम रूप शंकर होगया॥ ३॥

अनंगति०—(उस्तादसे) बहुत ठीक, मैं आपके हुनरकी बहुत तारीफ करती हूं, लीजिये इस तुच्छ भेंटको स्वीकार कीजिये (उस्तादके हाथमें नोट देती है और वह उसे बन्दगी कर चला जाता है)

अनंग०—(उस्तादके जाने बाद पुष्पतिलकासे) मान्ना तो तू सीख गई अब मनुष्यको वशमें करनेकी विद्या और सीख ले। देख। आये हुए मनुष्य पर पैसा प्रेम दिखाना चाहिये और उससे इस प्रकार वर्ताव करना चाहिये कि वह फंस जाय यानी प्रेममें अन्धा बन जाय।

पुष्पति०—हां मा। मैं ये सब जानती हूं, मैंने रोज यही देखा है। "भूसोंके आये बिल ही खोदते हैं" उनको विशेष शिक्षा देनेकी जरूरत नहीं है।

अनंगति०—(खुश होकर) शाबाश बेटी! ऐसा ही चाहिये… (आइट पाकर कहना बन्द कर देती है। कर्मकारका प्रवेश)

कर्मकार—(गुणभद्राकार भेजा हुआ, बन्दगीके बाद) हे वेश्याओंमें श्रेष्ठ अनंगतिलका! आज हम तेरे हाथमें एक सोनेकी चिड़िया देने आये हैं। अब देखना चाहिये कि तू उसे अपने रंगमें किस प्रकार रंग लेती है।

अनंगति०—बैठो भाई! क्या बात है? जरा साफ साफ कह जाओ जिससे मुझे यथार्थ घटना मालूम हो।

कर्मकार—(बैठकर) यहां एक सेठ मणिभद्र बड़ा मालदार है मगर शास्त्राभ्यास विशेष होनेसे विषयोंसे सर्वथा विरक्त है।

उसकी भ का उद्देश्य उसे विषयानुरागी बनानेका है, सो उसे फँसाओ और अपना काम भी बनाओ। घर बैठे ही अमीर हो जाओगी।

अनंगति०—क्या वह सेठ हमारे घर पर आ सकेगा या वहाँ जाकर कुछ अपना प्रपंच करना पड़ेगा।

कर्मकार—यों तो वह क्या आवेगा मगर लानेकी तदबीर की जायगी। हम उसे आपके घर पर कर जांयगे, बाद ठीक ठाक करना आपका काम है।

अनंगति०—अच्छा लाइये, उसको यहाँ आने पर ही सब ठीक कर लिया जायगा।

कर्मकार०—हम उसको आपके पास ले आते हैं।

(कहकर कर्मकार चला जाता है)

यवनिका पतन।

अंक पहिला—सीन तीसरा।

स्थान—सेठ मणिभद्रका मकान।

मणिभद्र और कर्मकारका खड़ा दिखाई पड़ना।

कर्मकार—(मणिभद्रसे) शहरमें एक बड़े भारी महात्मा आये हुए हैं, वे अनेक शास्त्रोंके जानकार हैं, उनके दर्शनके लिये सभी लोग जा रहे हैं, आपको भी उनके दर्शनार्थ अवश्य चलना चाहिये।

मणिभद्र—वे महात्मा कहां पर ठहरे हुये हैं ? क्या तुमने उन्हें देखा है ?

कर्मकार—वहीं तो पास ही की धर्मशालामें ठहरे हुये हैं उनके आनेकी प्रशंसा सब लोग कर रहे हैं। जिससे सुनिये वही तारीफ करता है। ऐसा कोई भी पुरुष नहीं जो उनके दर्शनकर अपनेको कृतकृत्य नहीं समझता हो।

मणिभद्र—तब तो जरूर ऐसे महात्माका दर्शन करना चाहिये और उनके उपदेशामृतका पान करना चाहिये। क्या अभी चलें ?

कर्मकार—हां, यही समय उपयुक्त है। बादमें जानेसे उनसे मुलाकात न हो सकेगी।

मणिभद्र—चलो मैं अभी जानेको तयार हूं (ज्योंही मणिभद्र चलता है त्योंही उसका मित्र दिनेश आ जाता है)

दिनेश—(मणिभद्रको कहीं जाता हुआ देखकर) मित्र! इस समय आप कहां जा रहे हैं, आप तो घरसे बाहर कभी निकलते भी न थे, आज क्या बात है ?

मणिभद्र—शहरमें एक बड़े भारी योगी आये हुए हैं, मैं उन्हींके दर्शन करने जा रहा हूं। अच्छा हुआ तुम भी ठीक मौके पर आ गये, नहीं तो मुझे खुद तुम्हारे यहां आना पड़ता। चलिये आप भी साथ साथ चलिये।

दिनेश—हमने तो किसी महात्माके आनेकी नहीं सुनी है, आप को यह बात कैसे मालुम हुई।

मणिभद्र—ये ही कर्मकार कह रहे हैं कि वे यहीं पास ही की धर्मशालामें ठहरे हुए हैं, बड़े सन्त एवं विद्वान् हैं।

कर्मकार—(दिनेशको इशारा कर) अजी आपको नहीं मालूम है, वे अभी २ ही आये हैं (पास जाकर दिनेशके कुछ कानमें कह देता है)

दिनेश—(यथार्थ बात जानकर) अभी आये होंगे; मैं आज कार्यवश बाहिर चला गया था, इसीसे ये समाचार सुननेमें नहीं आया। अच्छा; चलिये, मित्र मैं आपके साथ साथ ही चलता हूं। (मणिभद्र अपने मित्र दिनेश और कर्मकारके साथ चल देता है। [यवनिका पतन]

अंक पहिला–सीन चौथा।

अनंगतिलका का महल।

अनंगतिलका पुष्पतिलकासे बात चीत कर रही है। बाजारमें दो मस्त हाथी ऊधम मचा रहे हैं।

कर्मकार—(दोनों हाथियोंको दो तरफसे आते देख कर) दिनेश! दिनेश!! देखो सामनेसे यह खूनी हाथी सबको मारता रूंदता आ रहा है। चलो, कहीं बचकर प्राण बचावें।

दिनेश—(पीछे देख कर) हैं, देखो न, पीछेसे भी एक मदोन्मत्त गज कैसा दौड़ा आ रहा है। आज क्या बात है, जान बचेगी कि ?! दोनों तरफके रास्ते बन्द हैं।

कर्मकार—यहां संकटका समय उपस्थित है, चलो भाई! इस सामनेवाले घरमें चलें और अपनी जान बचावें, बाद साधुके दर्शन करेंगे।

दिनेश—ठीक है, ठीक है, बस जल्दी चलो और कोई बचनेका दूसरा उपाय नहीं है। कर्मकार और दिनेश मणिभद्रको सामनेवाले अनंगतिलकाके मकानमें लेजाते हैं। कर्मकार अनंगतिलकाको इशारेसे सब हाल समझाकर दिनेशसहित मणिभद्रको वहीं छोड़ आप मौका पाकर नीचे उतर आता है।

अनंगति०—(पुष्पतिलकासे) हां; बेटी! क्या देखती है? सामने सोनेकी चिड़िया बैठी है, पकड़ती क्यों नहीं? मैं जल पीने जाती हूं, तू इन बाबुओंकी जरा खातिरदारी करना। (कहकर अनंगतिलका भी चली जाती है)

मणिभद्र—(कुछ देर बाद पुष्पति० से) तुम कौन हो? क्या यही महात्माका मकान है? देखो तो सही क्या हाथियोंका उपद्रव शांत हो गया?

दिनेश—[स्वगत] हां, तुमको रास्ते पर लानेवाले महात्मा ये ही हैं, जरा बैठो तो सही, मालूम हो जायगा कि—ये गुरू तुम्हारी कैसी हजामत करते हैं।

पुष्पति०—[हाथ जोड़ कर] कृपाकर आप विराजिये, मैं अभी तुरत देख आती हूं [जाकर थोड़ी ही देरमें फिर लौट आती है] अभी तक वे दोनों हाथी खून खराबी कर रहे हैं, न किसीको आने देते हैं और न किसीको जाने देते हैं। बड़ा भारी कोलाहल हो रहा है।

मणिभद्र—[उदास होकर] मित्र दिनेश ! कर्मकार कहां चला गया ! उसके न होनेसे महात्माके दर्शन कौन करावेगा।

दिनेश—[स्वगत] महात्माके दर्शन तो हो गये, अब उपदेश और बाकी है सो धीरे धीरे सुना करगा [प्रगट, मित्रसे] क्या मैं जाकर कर्मकारको बुला लाऊं ? [जाता है]

मणिभद्र—[रोककर] नहीं मित्र, तुम मत जाओ, कर्मकार भी चला गया और तुम भी चले जाओगे तो मेरा यहां दिल ही कैसे लगेगा ?

दिनेश—नहीं मित्र ! मैं अभी आता हूं, कर्मकार अवश्य उन्हीं महात्माके पास सूचना देने गया होगा। मैं भी उन हाथियोंका उपद्रव मिटाने जाता हू। मैं अभी लौट आता हूं आप चिन्ता न करें। [कहकर दिनेश भी चल देता है।]

मणिभद्र—न मालूम यहां पर कब तक बैठना होगा ?

पुष्पतिः—[मणिभद्रसे] चलिये और उस सामनेवाले कमरेमें बैठिये। मैं आपको हाथियोंका उपद्रव शांत होते ही पहुंचा दूंगी। [बड़ा प्रेम दिखाती है]

मणिभद्र—अच्छा चलो, यहीं पर अब,तक बैठेंगे तब तक कि हाथियोंका उपद्रव शांत न होगा। पुष्पतिलका मणिभद्रको कमरेमें लिवा आती है। मणिभद्रको ऊंचे सिंहासन पर बैठाती है और आप नीचे बैठ जाती है]

मणिभद्र—देखो तो सही, क्या अभी तक उन हाथियोंका उपद्रव शांत हुआ या नहीं ?।

पुष्पति०—नहीं, जब उपद्रव शांत हो जायगा तब आपके पास खबर आ जायगी। मैंने अपने आदमियोंको वहाँ खबर लानेके लिये नियत कर दिया है कि वे उपद्रव दूर होते ही यहां तुरंत खबर दें।

मणिभद्र—तब ऐसे खाली बैठनेसे चित्त नहीं लगता। देखो किस कामके लिये तो आये थे और बीचमें किस झंझटमें फँस गये।

पुष्पति०—आप किस कार्यके लिये आये थे; यदि उसका बताना उचित हो तो मुझसे कहिये, शायद मैं उसे कर सकूं।

मणिभद्र—क्यों नहीं! मैं अपने मित्र दिनेशके साथ एक धर्मात्माके दर्शन करने और उनसे तत्त्वचर्चा सुनने आया था। मगर क्या किया जाय "श्रेयांसि बहु विघ्नानि" वाली नीति चरितार्थ हो ही जाती है।

पुष्पति०—क्या हर्ज है, वह भी कार्य हो जायगा। अभी तो जो मेरे योग्य सेवा हो उसे कहिये, मैं उसे करनेको सर्वथा तयार हूं। क्या आपको प्यास लगी है? लीजिये और इस अमृत-समान जलको पीजिये। [सुवर्ण ग्लासमें पानी देती है]

मणिभद्र—नहीं, प्यास नहीं लगी है और यदि लगे भी तो क्या मैं बिना जाने बूझे थोड़े ही जल पी सकता हूं?

पुष्पति०—हम कोई नीच जाति नहीं हैं, आप फिक न करें। आपको यहां सभी चीजें शुद्ध मिल सकेंगी।

मणिभद्र—क्या तुम्हारे पास शास्त्र नहीं है, मैं स्वाध्याय करना चाहता हूं बिना शास्त्रस्वाध्यायके मेरा मन नहीं लगता है।

पुष्पति०—शास्त्र तो बहुत हैं मगर वे मेरे दूसरे घर पर हैं, इन हाथियोंकी वजहसे रास्ता बंद है। कहिये तो मैं कुछ मुखाग्र बातें कहूं। बाद जैसी आपकी आज्ञा होगी शास्त्र वगैरह ला दिये जायेंगे।

मणिभद्र०—क्या तुम पढ़ी हुई हो?

पुष्पति०—हां, मैं पढ़ी हुई हूं और शास्त्र बांचने सुननेका मुझे बड़ा शौक है। यदि आपकी आज्ञा हो तो कुछ तात्विक बातें सुनाऊं।

मणिभद्र—कहिये, तब तक तत्वचर्चा ही सही। कुछ समय प्रश्नोत्तरमें करनेसे ही ठीक होगा।

पुष्पति०—संसारमें दो पदार्थ हैं।

मणिभद्र—कौनसे?

पुष्पति०—एक जीव और दूसरा अजीव।

मणिभद्र—तुम कौन हो?

पुष्पति०—हम संसारी जीव हैं।

मणिभद्र—संसारी जीव किसे कहते हैं?

पुष्पति०—जो संसारमें उलझे हुये हैं, पंचेन्द्रियसंबंधी विषयोंमें फंसे हुए हैं, वन्हें ही संसारी जीव कहते हैं।

मणिभद्र—विषय क्या चीज है?

पुष्पति०—जो हम और आप दिन रात सेवन करते हैं उन्हींको विषय कहते हैं।

मणिभद्र—हम और आप दिन रात क्या सेवन करते रहते हैं? खुलासा समझाओ।

पुष्पति०—अनेक चीजोंका स्वाद लेना, अनेक प्रकार सुगंधित वस्तुओंकी खुशबू लेना, मनोहामनोज्ञ चीजोंका अवलोकन करना कर्णप्रिय मधुर गान और मनोहर शब्दोंका सुनना तथा स्पर्शेन्द्रियजनित स्त्री पुरुष द्वारा विषयजनित सुखका आनन्द लेना, बस, इन्हीं सब विषयोंको हम और आप रात्रि दिवस सेवन करते हैं। क्या और भी विशेष खुलासा करूं?

मणिभद्र—ठीक है, मगर कोई २ बात हमारी समझमें नहीं बैठती।

पुष्पति०—कहिये कौन सी बात आपकी समझमें नहीं आती?

मणिभद्र—जो तुमने पीछेसे कही है।

पुष्पति०—[मुसिका कर] अच्छा, वह भी समझमें आजायगी क्या आपको और भी कुछ बातें सुनाऊं? मैं यही कहना चाहती हूं जो आपको रुचिकर हो। मैं अपनेको बडी सौभाग्यवती समझती हूं जो आपका मुझे संबंध प्राप्त हुआ है। सच कहती हूं मुझे आपके देखनेहीसे इतना प्रेम हो गया है कि जिसका बयान जिह्वा नहीं कर सकती।

मणिभद्र—और यही दशा मेरी भी हो रही है। न मालूम तुम्हारी वचनावलीने मेरा मन ऐसा स्थिर क्यों कर दिया है कि

यह अब दूसरी जगह जाता ही नहीं। मैं कुछ नहीं कह सकता हूं कि यह किसका चमत्कार है।

दिनेश—[एक तरफ छुपा २, स्वगत] खूब फँसा, जहाँ तो चन्द्रकिरणके समान अपनी स्त्री चन्द्रप्रभासे इतना परेज! और यहां पर ये गुलछर्रे उड़ रहे हैं!! ठीक है यदि यह यहांपर फँस जाय तो मैं भी उधर अपने दिलीहौसले पूरे करूं और उस अलौकिक आनन्दको भोगूं।

पुष्पति०—इसमें अवश्य कोई न कोई परभवका सम्बन्ध है, बिना उसके किसीका भी सत्य ऐसे दिलीप्रेम नहीं हो सकता।

मणिभद्र—ठीक कहती हो, शास्त्रोंमें भी ऐसे कई दृष्टान्त देखनेमें आये हैं जो पूर्व भवके प्रेमासिक्तको बतलाते हैं। यही वजह है कि मेरा दिल तुम्हारेमें अनुरक्त हो गया है।

पुष्पति०—ठीक है। क्या आप एकाद गाना सुनेंगे?

मणिभद्र—[प्रेमपूर्वक] सुनाओ न, तुम्हारा वचन मुझे बहुत प्यारा लगता है।

पुष्पति०—अच्छा, सुनिये। [गाना गाती है]

जाओ जी जाओ मुझ नादानको फुसलाने आये ॥ टेक॥
मुझको बहकाने आये, दिलको चुराने आये,
नैननसे नैन मिलाये, सैननमें सैन चलाये।
पूरे नादान, जिनकी नादानी दिखलाने आये ॥ जाओ० ॥ १ ॥

तुमने मेरा दिल लीना, अपना मुझको नहि दीना,
मुझ पर तो जादू कीना मैं तन मन अर्पण कीना।
हमतो कुरवान तुमपर हमको क्या समझाने आये ॥जाओ०॥२॥

मणिभद्र—अहा, क्या अच्छा गाना गाया है। मालूम पड़ता है यह बौछार मेरे ऊपर ही पड़ रही है।

पुष्पति०—क्या मैंने झूठ कहा है? मैंने जो भी कहा है वह सब सच ही है। क्या आपको मेरा कहना असत्य मालूम पड़ता है?

मणिभद्र—तो क्या मेरा दिल तुमने नहीं ले लिया है? क्या मैं तुम पर दिलोजानसे आशक नहीं हूं? प्रिये! तुम्हारा गाना मुझे बहुत भला मालूम होता है।

दिनेश—(छिपा हुआ) हां, अब यह ठीक काठका उल्लू बन गया। सच है जो इन चुड़ेलोंके हाथमें फंस जाते हैं वे सूखे थोड़े ही निकलते हैं, अवश्य उन्हें दीक्षित होना ही पड़ता है। [मणिभद्रसे पासमें आकर] क्यों मित्र। चलोगे या कुछ देर और यहीं पर रहोगे? यदि आप थोड़ी देर तक यहीं पर विराजें तो मैं एक और जरूरी काम कर आऊं।

पुष्पति०—[दिनेशसे परदा करके] इनसे कह दीजिये न कि चले जांय। अपना जरूरी काम कर आवें, मैं थोड़ी देर बाद खुद आ जाऊंगी।

मणिभद्र—[दिनेशसे] अच्छा, आप अपना जरूरी काम कर आइये, मैं थोड़ी देरबाद आ जाऊंगा।

दिनेश—[स्वगत] देखा कैसा फँसा। ठीक है, ये रहें जितना कर उतना थोड़ा है। क्या मालूम था कि यकायक मणिभद्रकी इतनी जल्दी हम दर्जेकी हालत हो जायगी ! खैर, मेरे लिये तो अच्छा ही हुआ कारण कि इसके रहते मेरी कब बात बनने वाली थी। अब जाता हूं और उस नाजनींसे मिलने एवं अपने वश करनेकी तरकीब सोचता हूं। (प्रगट-मणिभद्र०) अच्छा मित्र। तो मैं जाता हूं, आप यहीं पर रहिये, मैं फिर आ जाऊँगा।

मणिभद्र०—(उदासीनतासे) जाये। दिनेश जाता है किन्तु उसे रास्तेमें ही अनंगतिलका रोक लेती है।

अनङ्गति०—(दिनेशसे) आप मिहरबानी करके अभी उनके पास न जाया करें नहीं तो बना बनाया खेल बिगड़ जायगा। आप जानते हैं हमको इसमें कितना परिश्रम करना पड़ा है। यदि आपको मिलने आदिकी ख्वाहिश हो तो मुझसे मिल लिया करें।

दिनेश—ठीक ! मैं तो यही देखने गया था कि देखूं इसका मन रंजायमान हुआ या नहीं ?

अनङ्गति०—अभी रंग लगने दीजिये बिना रंगे उनसे बात न कीजिये नहीं तो परिणाम उल्टा होगा, हमें फिर सदुद सहना होगा। हमें रंग लगा फिर पकाना होगा, हमारा अभी काम पका न होगा॥ पक्क अवस्था होने पर आप आ सकते हैं।

दिनेश—(स्वगत) तू रंग गहरा लगा चुकी है, काफी उसे तू फंसा चुकी है।

अदामें देके धक्का औ लेना, बना ठीक उल्लू इसे लूट लेना ॥
दिया मंत्र कानोंमें फूंक तूने, लिया सीख भी मन्त्र वेग सु मैंने ॥

(प्रगट अनंगवि० से) अच्छा ऐसा ही होगा, आजसे आप हीसे मुलाकात किया करेंगे।

अनङ्गति०—और जरा खर्चा वर्चा भिजवा दीजिये। आप जानते हैं कि जब तक आपके मित्र यहां पर रहें तब तक हम दूसरी रोजी नहीं लगा सकते, इन्हीं पर हमारा सारा खर्च समझिए।

दिनेश—सो तो ठीक है, क्या यह बात हम नहीं जानते, अवश्य आपके पास रकम भेज दी जाया करेगी। मगर इस रकममें तुम्हें मेरा हिस्सा भी रखना होगा।

अनङ्गति०—क्यों नहीं ? आप हमारा कार्य करेंगे तो क्या हम आपका ख्याल न करेंगी ?

दिनेश०—बस ! यही एक ख्यालमें रखनेलायक बात है, अच्छा, मैं जाता हूं और रकम भिजवाता हूं (कहकर दिनेशके जाते जाते कर्मकारका प्रवेश)

अनङ्गति०—(कर्मकारको रोककर) अभी आप वहां न जाँय नहीं तो सब गुड़ गोबर हो जायगा। (दिनेशकी तरफ इशारा कर) ये भी मेरे बिना पूछे इनके पास चले गये थे। इनके जाते ही एकदम भाव बदल गया था मगर मैंने इन्हें जल्दी इशारेसे बुला लिया। मैंने इन्हें सारी बातें समझा दी हैं आप भी इनके हितेच्छु हैं सो जब तक पूरा काम न बन जावे तब तक मेरे बिना

मुझे आप हरगिज उनके पास न जावें नहीं तो हमारी सारी मिहनत व्यर्थ जायगी।

कर्मकार—आगेसे ऐसा ही होगा, हम आपहीसे मिलकर सब हालत दरयाफ्त कर लिया करेंगे। आपकी बिना आज्ञाके न आवेंगे।

अनङ्गलि॰—तब आपका कार्य भी जल्दी हो जायगा। आप कुछ खर्च अवश्य दे जावें, इसका सब कारण हम बाबू साहबसे कह दिया है और संक्षेपमें आपसे भी कहती हूं कि अब तक आपके सेठजी हमारे यहां पर रहेंगे तब तक हम अपनी दूसरी आजीविका नहीं लगा सकती हैं अतएव आपका ख्याल इधर अत्यन्त आवश्यक है।

दिनेश—हां, आपका कहना ठीक है। (कर्मकारसे) सेठा-नीजीसे कहकर आप इनके पास जरूर खर्च भेज दीजियेगा।

कर्मकार—घर पर जाते ही मैं आपके लिए खर्चा भेज दूंगा। इसकी आप चिन्ता न करें।

अनङ्गलि॰—क्यों नहीं? आप लोगोंसे कुछ छुपा नहीं है कि हमारी यही आजीविका है। कभी कभी आप दोनों महाशय इस गरीबखानेको आकर पवित्र किया करें और हम कमबख्तपर मिहरबानी रक्खें।

कर्मकार—ऐसा ही होगा। तो अब हम लोगोंको आप जानेकी इजाजत दीजिये, बाद आकर फिर मुलाकात करेंगे (कहकर दोनों चले जाते हैं और इधर अनङ्गलतिका भी चली जाती है)

पुष्पति०—(मणिभद्रसे) तो क्या आप गाना सुनेंगे या नाच देखेंगे ?

मणिभद्र—क्यों नहीं ! गाना भी गावो और साथमें नाच भी दिखाओ।

पुष्पति०—सुनो (गाना गाती है और नाचती है)

जादू आखोंका दिलमें समाय गयो रे।

समाय गयो, समाय गयो, समाय गयो रे।

जादू आखोंका दिलमें समाय गयो रे॥ टेक॥

मेरा मन ले गया, अपना नहिं दे गया। मेरे विरहाग्नि तनमें लगाय गयो रे॥ जादू०॥ १॥ मैं तो विरहिणी हो, सहती हूं दुख जो॥ मेरे आशाकी फांसी लगाय गयो रे॥ जादू आखों०॥ २॥ प्यारेकी यादमें पागल हुई हूं मैं। मेरे दिलमें तह कांटा चुभाय गयो रे॥ जादू०॥ ३॥

मणिभद्र—अहा। क्या अजब रूप और नाज है! प्यारी तुम्हारे साथ हम भी गावेंगे।

पुष्पति०—गाओ न प्यारे! (दोनों उठकर गाते हैं)

हम दोनोंका आज मन भाय गयो रे॥ भाय गयो भाय गयो भाय गयो रे, हम दोनोंका आज मन भाय गयो रे॥ टेक॥ आज मिलकर गावो, प्रेम रस बरसावो। ठीक जोबन जवानी पे आय गयो रे॥ हम दोनों०॥

कैसी जुगल जोडी, मेरी सुभग तेरी। ऐसी हालतको हमरो बनाय गयो रे॥ बनाय गयो बनाय गयो फंसाय गयो रे। हम दोनोंका आज मन भाय गयो रे॥ २॥

दिनेश—(जो एक तरफ छुपा खड़ा है) और कौन ऐसी हालत बनायेगा, मैंने ही तुम्ह उल्लूको यहां फँसाया और यहां अपना काम बनाया, तू तो यहीं पर सड़ता हुआ देखना कि अंत-में तेरी क्या दशा होती है, बेवकूफ! कहीं वेश्या भी किसीकी होती है? यह धनके साथ साथ जान भी ले लेती है। मर साले। मैं भी तुम्हें ये बातें क्यों सुझाऊँ?

अनङ्गति०—(इशारेसे बुलाती हुई धीरे २) क्यों आप फिर वहां पहुँच गये! यह क्या बात है?

दिनेश—(पासमें आकर) नहीं जी। मैं उनको अपनी सूरत थोड़े ही दिखाता हूं। लीजिये न, जरा हाथ आगे बढ़ाये। (हाथमें रुपयोंकी एक थैली देकर) इसे आप ऐसा फंसाओ कि वर्षों तक आपके चुंगलसे बाहिर न होने पावे, अभी तो इसका धन जो करोड़ों होनारोंका है, आप ले सकेंगी।

अनङ्गति०—ऐसा ही होगा, क्या आप जा रहे हैं?

दिनेश०—एक जरूरी काम होनेसे मैं अधिक नहीं ठहर सकता।

अनङ्गति०—तो क्या कुछ देरके लिये भी न बैठेंगे?

दिनेश—अभी नहीं बैठ सकता, माफ कीजियेगा। देखो मेरा भी ख्याल रखना, ऐसा न हो कि आप मेरी याद ही न करें। मेरी रकम जुदी रख दिया करना (कहकर जाता है)

अनङ्गति०—(दिनेशके जाते २) अरे हरामजादे! कहीं वेश्याओंसे भी किसीने धन वापिस लिया है, जो तू ये शैतान-

सरीखी बातें कर रहा है। जा, तुमसे बढ़कर मेरे यहां राज आते हैं (कहकर यह भी चल देती है)

पुष्पति०—प्यारे ! रात्रि बहुत हो गई है, चलिये आराम करें।

मणिभद्र—अच्छा, चलिये (दोनों चले जाते हैं)

[यवनिका पतन]

अंक पहिला—सीन पांचवां।

दिनेशका मकान।

दिनेश अकेला टहल रहा है।

दिनेश—(टहलता हुआ) "संसार व्यवहारस्तु नहि माया विवर्जितः" इस नीतिके अनुसार अपना काम बनानेके लिये इस जीवको छल-कपट अवश्य करना ही पड़ता है। बिना ऐसा किये वह अपने कार्य को पूरा कर ही नहीं सकता। देखो! आज मैं इसी नीतिकी वजहसे अमनचैन कर रहा हूं। मेरे पास इसके पहिले मामूली पुंजी थी मगर आज मैं मणिभद्रके नाम जाली झूठी चिट्ठी लिख २ कर लाखों रुपयों-का माल ले धनवान बन गया हूं। मणिभद्र भी पूरी तरह फंस गया है वह उस वेश्याके चुंगुलसे निकल नहीं सकता। जब तक वहांसे निकलेगा तब तक मैं अपना सब काम बनाकर कहीं दूर देशान्तर चला जाऊंगा और मौज करूंगा। यह तो सब हुआ मगर मेरी अभी एक और मुराद बाकी है, देखू मेरी

चतुर दूती उसकी भी क्या खबर लाती है। अहा! वह मृगलोचनी अपने मनोहर प्रभाशाली वदनसे चन्द्रमाकी द्युतिको फीका करनेवाली चन्द्रप्रभा मेरे दिलमें ऐसी प्रवेश कर गई है कि उसकी जुदाई मुझे बेताब किये देती है। [दूतीका प्रवेश होते ही जल्दीसे] कहो। क्या हुआ? उसने आना मंजूर किया या नहीं?

निपुणा—वह औरत बड़ी छॉट है, किसीका भी नाम तक नहीं सुनना चाहती।

दिनेश—तो क्या मुझे उनके वियोगमें छटपटा कर प्राण दे देना होगा!

निपुणा—काम तो बहुत कठिन है।

दिनेश—क्या कोई है काम ऐसा जो तेरेसे भी न हो।
सैकड़ों करि काम ऐसे फिर भी क्यों गमगीन हो॥
मिले हैं सार्टीफिकट तुझको बहुत इस काम के।
फिर भी हिम्मत हारती क्यों जा उसे समझायके॥

देखो! तुम्हें मालामाल कर दूंगा। मुँहमांगा इनाम दूंगा। तुम एकबार उस नाजनीसे अवश्य मुलाकात करा दो।

निपुणा—करूंगी कोशिश, अभीसे आप क्यों घबरावते।
जायगा खाली न मेरा वार क्या समझावते॥

मैं वायदा करती हूँ कि उस पीनस्तनीसे तुम्हारी शीघ्र ही मुलाकात कराऊंगी।

दिनेश—अभी तक तुमने क्या कार्रवाई की है अरा उसे संक्षेपमें बयान कर दीजिये ताकि मेरे दिलमें कुछ तो तसल्ली आ जाय।

निपुणा—मैंने प्रथम उसे बहुत समझाया, अनेक प्रकार लुभाया, उसके दिलमें अनेक भाव पैदा करनेकी कोशिशें कीं मगर उसके दिलमें एक भी बात न बैठी जिससे मैं अपना कार्य किसी तरह निकालती।

दिनेश—तो क्या तुम्हारी बातोंमें वह नहीं आई ?

निपुणा—मगर मैंने उसका पीछा नहीं छोड़ा और इसी विचार में लगी कि कौनसी तरकीब करनेसे यह कार्य बन सकता है। मैं कुछ ही दिनोंमें उसकी सासु गुणभद्राके पास गई और कह सुनकर दाईका काम हाथमें लिया, धीरे धीरे विश्वास जमाकर मैं रात्रिमें भी आज कल वहीं रहने लगी हूं।

दिनेश—अब तो तुमने बहुत अच्छा काम किया, अब मुझे भी उम्मीद बंधती है कि यह कार्य बन जायगा। तो क्या वहीं पर आनेका रात्रिमें मौका नहीं लगा सकतीं? क्या वह गुणभद्राके साथ सोती है या तुम्हारे साथ ?

निपुणा—प्रथम तो सासु बहु एकही कमरेमें सोती थीं मगर आजकल मैंने विशेष मेल जोल बढ़ा लिया है इससे कभी कभी हम दोनों भी एक कमरेमें सो रहती हैं।

दिनेश—(उछल कर) शाबाश ! अब तो तूने आधेसे भी अधिक काम कर लिया। अब मेरेसे मुलाकात होनेकी तुमने क्या तरकीब सोची है ?

निपुणा—बस, आज रात्रिको तुम ठीक बारह बजे वेश बदल कर आना, मैं जागती रहूंगी। तुम ज्यों ही किवाड़ खटखटाना, मैं यह इशारा सुनते ही भीतरसे किवाड़ खोल दूंगी। लेकिन खिड़कीकी राह आना। देखो ! आजकल कर्मकार बड़ी चौकसी रखता है इससे हमेशा बचते रहना। यह रहस्य उसे न बताना।

दिनेश—नहीं, इसे मेरे और तेरे सिवाय कोई भी नहीं जान सकता। तो क्या मैं आज ही रात्रिके ठीक बारह बजे वहां आ जाऊं।

निपुणा—हां, आज ही ठीक समय पर अवश्य आइये। देखिये कोई गल्ती न हो।

दिनेश—क्या आप अभी जा रही हैं ?

निपुणा—हां, जा रही हूं। देरी होनेसे मालकिनको संदेह हो जायगा कि इतनी देर इसने कहां पर लगाली। इससे मेरा अभी जाना मुनासिब है।

दिनेश—(हाथमें नोट देकर) लीजिये और अपने वायदेपर पक्का रहिये, मैं कार्य होने पर तुम्हें मालामाल कर दूंगा। (निपुणा दूती चली जाती है।)

दिनेश—(स्वगत) अब चन्द्रप्रभाको भी अपने हाथ लगी ही समझो। फिर क्या है। कहीं रम्य प्रदेशमें जाकर दोनों प्रेमी आमोद-प्रमोद करेंगे। चलूं और अपनी पोशाक एवं वेश बदलनेकी फिक्र करूं। (कहकर दिनेश भी चला जाता है)

[यवनिका पतन] ड्राप

प्रथमांक-समाप्त।

द्वितीयांक

अंक दूसरा—सीन पहिला।

अनंगतिलकाका मकान।

मणिभद्र और पुष्पतिलकाका बैठा दीखना।

पुष्पति०—कहिये प्यारे! अब आपका क्या विचार है?

मणिभद्र—मुझे तो तुमने ऐसा कब्जेमें कर लिया है कि कहीं भी दूसरी जगह एक घड़ीके वास्ते भी जानेकी इच्छा नहीं होती। वास्तवमें तुम्हारा प्रेम एक अलौकिक प्रेम है।

पुष्पति०—और क्या तुमने मेरा चित्त अपनी ओर आकर्षित नहीं किया है? जो स्वप्नमें भी दूसरी तरफ नहीं जाता।

मणिभद्र—इसमें मुझे संदेह है कि तुम्हारा और चित्त दूसरी तरफ न जाय! यह प्रकृति-विरुद्ध बात है।

पुष्पति०—नाथ! मुझको अन्य वेश्या सी कभी जानो नहीं।

जन्म पानेसे कभी वेश्या मैं हो सकती नहीं॥

प्राणप्यारे! आपका यह प्रेम दिलमें लग गया।

उसको दिलसे दूर होना अब असम्भव हो गया॥

क्या मिट्टीमें पड़ा हुआ सोना मिट्टी हो जाता है?

मणिभद्र—जानता हूं मैं तेरा निष्कपट सच्चा प्रेम है।

मगर क्या आजन्म ठहरेगा यही संदेह है॥

मुझे यह प्रेम क्षणभंगुर ही दीखता है।

पुष्पति०—नहीं स्वामी ! प्रेम ये मेरा चिरस्थायी रहे।

इस बदनको और कोई दूसरा क्या छू सके॥

क्या आप जानते हैं कि मेरे इस शरीरको कोई अन्य स्पर्श करेगा? हरगिज नहीं, यह स्वप्नमें भी न होगा। मेरे जीवनाधार आप ही रहेंगे। सूर्य पश्चिममें उदय होने लगे तो लग जाय, सुमेरु चाहे चलायमान हो जाय, मगर मेरा प्रेम विचलित नहीं हो सकता।

मणिभद्र—इसका क्या प्रमाण है? यदि हम हमारे प्रेममें कोई बाधक हो गया और उसने हमारे दिलोंमें द्वैधीभाव पैदा कर दिया तब क्या होगा? क्या उस समय तुम मेरेसे अपना प्रेम बायदा निभाओगी?

पुष्पति०—एक तो ऐसा होगा ही नहीं, और यदि कदाचित् ऐसा निमित्त मिल भी गया तो मैं अपने इस शरीरको आप पर न्योछावर करूंगी। आपके दुःख विरहमें मैं योंहीं न बैठी रहूंगी। मैं सच्चे दिलसे कहती हूं कि आपको छोड़ मुझे स्वप्नमें भी कोई स्पर्श न कर सकेगा। क्या आपको मेरी इन बातों पर विश्वास नहीं है?

मणिभद्र—क्यों नहीं? मुझे विश्वास अवश्य है, मगर किसी कारणवश यह बात निकल पड़ी थी। तुम कुछ संशय न करो।

पुष्पति०—कौनसा कारण? क्या वह मुझे नहीं बता सकते?

मणिभद्र—क्यों नहीं? आजकल तुम्हारी माका कुछ विचार अन्यथा प्रतीत होता है। बस। इसीसे शक है कि कहीं कोई विघ्न न उपस्थित हो जाय।

पुष्पति०--नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता। आप फिक्र न करें, इस दासीको अपनी आजन्म सेविका समझें।

मणिभद्र—जब तुम्हारा प्रेम मेरे पर अटिल अनिवार है।
तब किसीके विघ्न करनेका नहीं अधिकार है॥

दिनेश—(स्वगत, छिपा हुआ)
है नहीं अधिकार इस दुर्बुद्धिको मालुम नहीं।
क्या रहीं सिरपर विपत्ती ये इसे मालुम नहीं॥
मुझे भी क्या गरज जो इसको सुझाऊं ये सभी।
जहन्नुममें जाय ये, मैं तो न ले जाऊं कभी॥

(प्रगट, मणिभद्रके पास जाकर) कहिये मित्र! क्या हाल-चाल है? तबियत तो प्रसन्न है न, मेरे लायक कोई काम हो तो कहियेगा (पुष्पतिलका मुंह फेर लेती है)

मणिभद्र—सब आनन्द है। मुझे यहां किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं है। जब तुम्हारे लायक कोई काम होगा तब हम खुद तुम्हारे पास समाचार भेज देंगे।

दिनेश—(स्वगत) देखा ढंग! अब तो इन्हे हमारा यहां आना भी खटकने लगा! चलो एक प्रकार अच्छा ही हुआ, मैं तो ऐसा चाहता ही था। (प्रगट) अच्छा मित्र! जैसी आपकी आज्ञा होगी वैसा ही किया जायगा। आप किसी बातकी फिक्र न करें। क्या घर पर चलनेका इरादा है?

मणिभद्र--अभी घर पर नहीं जाऊंगा। वहां जाकर ही क्या करूंगा? जरा एकबार कर्मकारको यहां पर भेज देना।

दिनेश—(स्वगत)

किया थे प्रश्न या मैंने इसीके भाव देखन को ।
ठीक अन्धा हुआ अब मैं चलूं निज काज साधनको ॥
आज उस चन्द्रवदनीसे निकालूं ख्वाहिशें मिलकर ।
जिन्दगीका मजा लूटूं बनाऊं नारि अब चलकर ॥

(प्रगट) कर्मचार आते ही होंगे, वे मेरे साथ आनेवाले थे मगर किसी कारणवश न आ सके । क्या मैं अभी जा सकता हूं ?

मणिभद्र—हां, जा सकते हो ।

अनंगति०—(जाते हुए दिनेशको रास्तेमें रोककर) मेरे बिना पूछे आप फिर वहां पहुंच गये ! देखिये, कहीं आपकी इस गल्तीसे हमारा कहीं बना बनाया काम न बिगड़ जाय । आप समझ कर काम नहीं करते ।

दिनेश—काम बिगड़ जायगा यह आप क्या कह रहे हैं । मैंने इन दोनोंकी बात चीत सुनी है, वे कभी भी इस प्रेम-प्रीति से जुदे नहीं हो सकते । आप थीं नहीं, इसीसे जरा हाल चाल देखने चला गया था । (थैली देकर) लीजिये और इसीसे अपनी खर्ची चलाइये । हां, इसमें मेरा भी भाग रखती जाना, भूल न करना ।

अनंगति०—यह सब आपकी ही मिहरबानी है । भला आप-का मुझे ख्याल क्यों न रहेगा ? क्या आप अभी जा रहे हैं ?

दिनेश—हां, जा रहा हूं । (कहकर दिनेश चला जाता है)

अनङ्गतिलका—(दिनेशके जाते समय) क्या इससे भी दुनियामें कोई बेवकूफ होगा ! जो हम सर्वभक्षियोंको रकम देता हुआ भी फिर वापिस लेनेकी आशा कर रहा है। "कहीं पेटमें गया हुआ भी भोजन फिर वापिस मिल सकता है ?" मुर्ख कहीं का। (कहती २ अनङ्गतिलका भी चली जाती है)

पुष्पति०—(मणिभद्रसे) चलिये, भोजन तयार है। समय अधिक हो गया है। पीछे भोजन ठंडा हो जायगा।

मणिभद्र—क्या भोजनका समय हो गया। मैं तो अभी प्रातःकाल ही हुआ समझता था। अच्छा, चलो। (दोनोंका चला जाना। [यवनिका पतन]

अंक दूसरा—सीन दूसरा।

दिनेशका मकान।

(दिनेश जानेकी तयारीमें खड़ा है)

दिनेश—(घड़ीकी तरफ देखकर) ठीक ग्यारहका समय हो गया, अब मुझे सब सामान ठीक करके चलना चाहिये। निपुणाके कहे अनुसार वेश बदल कर ही जाना ठीक होगा। (डाढ़ी, मूछ, तथा पाउडर आदि लगाकर वेश बदल लेता है। आयनेमें चहरा देख कर) अब मुझे कौन कह सकता है कि ये दिनेश है। अब चलना चाहिये, देरी करनेसे ठीक न होगा। कहीं ऐसा न हो कि सारा बना बनाया खेल बिगड़ जाय। निपुणाने

वास्तवमें जादूकासा काम किया है। यह अवश्य काबिल इनाम पानेके है। किसकी मजाल थी जो हजारों रुपया खर्च करने पर भी इतनी जल्दी कार्य कर देता। (जरा आगे चलकर खड़ा २ सोचता है) हैं; नोटोंका बिंडल तो भूल ही गया, इसके न होनेसे तो सारा गुड़ मिट्टी हो जाता। अच्छा हुआ; जो चलते समय ही याद आ गया, नहीं तो बड़ी कठिनाई पड़ती। (जाकर नोटोंका बिंडल पाकेटमें रख चल देता है। परदा गिर जाता है। गानेवालेका प्रवेश)

गाना—क्या दशा संसारकी है समझदारो देखलो।

सांचे,झूठे प्राणियोंकी करि परीक्षा परख लो ॥टेक॥

है जमाना बहुत खोटा पग संभाला सीख लो।

दुष्ट, दुर्जन प्राणियोंका कृत्य सारा देखलो ॥ १ ॥

मत बनो विश्वास-घातक यह सुशिक्षा सीख लो।

दुष्ट कर्मोंका नतीजा खूब पहिले सोचलो ॥ २ ॥

बिना जाने अंतमें पछिताओगे ये जान लो।

मत करो विश्वास सहसा 'कुंज' कहना मानलो ॥३॥

(गान वालेका चला जाना, उसी समय दिनेशका वेश बदले आना)

दिनेश—(मणिभद्रकी हवेलीके पास आकर) यद्यपि रात्रि सुनसान है मगर तो भी मुझे बहुत समझ बूझ कर काम करना चाहिये। (हवेलीकी तरफ देखकर) यह हवेली तो मणिभद्रकी ही है, तब चलूं और निपुणाके बताये हुए इशारेसे काम

लूं। (एक तरफसे कुछ खटकेकी आवाज सुन) है, कौन है। यह आवाज कहांसे आई ? (चारों ओर देख) कोई भी तो मालूम नहीं होता। फिर चलता है मगर फिर भी किसीके पीछेसे आनेकी आहट सुन) कोई है जरूर, मगर क्या कारण है कि मैं किसीको भी नहीं देख रहा हूं! (थोड़ी देर खड़ा रह चारों तरफ आश्चर्यसे देखकर) ये खुटके तो होते ही रहेंगे, यदि इन्हींसे मैं डर गया तो आगेका कार्य कैसे कर सकूंगा। चाहे जान भले ही चली जाय मगर उस मृगनयनीसे एकबार अवश्य मुलाकात करूंगा। (धीरे २ चलकर हवेलीके पीछेकी खिड़कीकी तरफ पहुँच कर चारों तरफ निगाह डाल) कोई भी तो नहीं है, मुझे झूठे ही भ्रम हो गया था। (बिलकुल खिड़कीके पास पहुँच ज्यों ही किवाड़ों पर हाथ लगाता है त्योंही इसके चेहरे पर चोर-लालटेनकी रोशनी पड़ती है) अरे ! यह क्या ! (एक चीख मार कर जमीन पर गिर पड़ता है)

द्वारपाल—(पकड़कर)

अबे है तू कौन जो आया अँधेरी रात में।
चले छिपता ताकता डोलै बना किस घात में॥
बता कारण यहां आनेका नहीं दूं मारकर।
देख इस शमशेरसे तेरा करूं मैं अलग सर॥

दिनेश—(घबड़ाकर)

हा ! मुझे मारो नहीं मुझ पर दयाकर छोड़ दो।
आ गया हूं इधर रस्ता भूल कर अब छोड़ दो॥
मुझे रास्ता बता दो, मैं चला जाऊंगा।

द्वारपाल (चमककर) बड़ा मक्कार मालूम होता है। अवे! कहां जा रहा था, जो रास्ता भूल गया। तू कांप क्यों रहा है?

दिनेश—(भयभीत होकर) डर लगता है हु जू र का डु र। मुझे छोड़ दीजिये, मैं अपनी रास्ता चला जाऊंगा।

द्वारपाल—(डपटकर) क्या सीधे अपना हाल नहीं बता-येगा? क्या बुलाऊं पुलिस को? तेरा नाम क्या है? और कहां का रहने वाला है?

दिनेश—(कांप कर) पुलिस! पुलिस!!

द्वारपाल—हां, पुलिस। यदि तू अपना नाम धाम ठीक न बतावेगा तो अभी पुलिसके हवाले कर दिया जायगा। क्या नाम नहीं बतावेगा?

दिनेश—बताऊंगा, क्यों न बताऊंगा; आप मुझे कृपाकर पुलिसके हाथमें न दीजिये।

द्वारपाल—तो जल्दी बता तेरा नाम क्या है? यहां क्यों आया? कहांका रहने वाला है?

दिनेश—(धीरे २) मेरा नाम है दि...ने...श...च द्र और रहने वाला यहीं का हूं।

द्वारपाल—और यहां किसलिये आया था?

दिनेश—किसलिये यह भी बताना होगा क्या आपको।

इन सबोंके पूछनेसे क्या गरज है आपको॥
मैं चला आता हू अपने ठीक घरके वास्ते।
तुम सताते व्यर्थ मुझको किस गरजके वास्ते॥

रहने दीजिये न, यह पूछ कर आप क्या करेंगे?

द्वारपाल—(डपट कर) फिर वही बात। जानता है हम कौन हैं? क्या नहीं बतावेगा? बुलाऊं पुलिस को।

दिनेश—(डरकर) जानता हूं। मेरा मित्र मणिभद्र आज बहुत दिनोंसे घर पर नहीं है। बस, इसलिये कभी कभी इधर देखरेखके लिये आजाता हूं।

द्वारपाल—झूठ! क्या बुलाऊं कर्मकारको, और पूछूं कि क्या तुमने इन्हें ऐसा करनेको कहा है कि ये गुपचुप वेश बदल चोरोंकी भांति छिपे छिपे रात्रिके बारह बजे पिछली खिड़कीसे आकर तुम्हारे घरकी चौकसी किया करें?

दिनेश—(हाथ जोड़) नहीं; कृपाकर आप ये बात कर्मकार से न कहियेगा। असली बात मैं आपको बतलाये देता हूं। मेरी इच्छा थी कि मणिभद्रके घर पर आऊं और उसकी स्त्रीसे मुलाकात करूं, मगर आज मुझे इन बातोंसे बड़ी घृणा हो गई है। आप माफ कीजिये और ये बात किसीसे न कहिये।

द्वारपाल—क्या ऐसा हो सकता है?

दिनेश—क्यों नहीं? आपकी कृपा होने पर यह कोई बड़ी बात नहीं है। मैं आपको इसकी एवजमें खुश कर दूंगा।

द्वारपाल—काम तो ये नीतिविरुद्ध है। मगर…

दिनेश—आपके उपदेशसे मेरा सुधारा हो गया।

अधमसरके वास्ते अहसान तुम्हारा हो गया॥
न्यायके अनुकूल सारा फैसला तुमने किया।
लीजिये रुपया सहसके नोट हो खुश मैं दिया॥

(कहकर नोटोंका बिंडल पाकेटमेंसे निकाल दे देता है) इसमें एक हजारके नोट हैं।

द्वारपाल—(नोट हाथमें लेकर) अच्छा, आप बड़े आदमी हैं, इससे मैं छोड़ देता हूं। मगर हां, आगे ऐसा फिर कभी भी विचार न कीजियेगा।

दिनेश—कभी नहीं। यदि आपकी आज्ञा होय तो अभी घर पर चला जाऊं।

द्वारपाल—हां! आप जा सकते हैं। (दिनेशके चले जाने पर) मालिकका नुकसान भी न हुआ और मेरा काम भी बन गया। यदि इसी प्रकार एक दो घात और लग जाय तब फिर इस नौकरीके करनेकी जरूरत न रहे। घर बैठे २ अमन चैन करूं, किसीकी फिर गुलामी करनेकी दरकार नहीं। आगे न मालूम मेरा भाग्य चेत जाय और ऐसी ही चिड़िया शायद फिर पकड़ हाथ आ जाय। भाग्य बलवान है वह जो न करे सो थोड़ा है। (कहकर द्वारपालका चला जाना)

[यवनिका पतन]

अंक दूसरा-सीन तीसरा।

मणिभद्रका महल।

[गुणभद्राके समाने कर्मकार खड़ा है]

कर्मकार—बाजारसे बराबर तगादा आ रहा है। अभी बहुतोंका रुपया देना है।

गुणभद्रा—सबका रुपया एकदम चुका दो और कहदो कि जो खर्चा मगाना हो यहांसे मगावें, परबारा परबारा बाहिर बिल न भेजा करें।

कर्मकार—ऐसा ही कह दिया जायगा, नहीं तो आगे आपत्तिका आना सम्भव है। (सेठ दौलतरामका प्रवेश)

दौलतराम—(बाहिरसे) सेठजी! सेठजी!! जरा बाहिर आइये, एक जरूरी काम है।

कर्मकार—(गुणभद्रासे) मालूम होता है सेठ दौलतरामजी होंगे कारण कि उनका अभी एक आदमी पचास हजार रुपयों का बिल लाया था। क्या उनका रुपया दे दिया जाय?

गुणभद्रा—हां सार्ह। उनका रुपया देना ही होगा, जाकर दे दो।

कर्मकार—(बाहिर आकर) कहिये सेठजी क्या, काम है?

दौलतराम—यह लीजिये पचास हजारका बिल। रुपयोंकी दरकार है, इसी वास्ते मुझे जल्दी आना पड़ा।

कर्मकार—लीजिये, आप अपना रुपया ले जाइये। (पचास हजारके नोट देता है तथा वहीं पर दस्तखत करा लेता है। दौलतरामके जाते ही दो दुकानदार और आ जाते हैं और अपना अपना बिल पचीस पचीस हजारका पेश करते हैं)

कर्मकार—(दोनों दुकानदारोंसे) अच्छा, आप लोग बैठिये, हम भीतरसे अभी आते हैं। (भीतर जाकर सेठानीसे) दौलतरामजीके पचास हजार चुका दिये मगर दो दुकानदार अपना

बिल पचास हजारका और लाये हैं। उन सब बिलोंपर मणिभद्रके दस्तखत हैं। कहिये, क्या किया जाय?

गुणभद्रा—(आश्चर्य करके) हाय! मेरे पुत्रकी यह दशा!! अरे! क्या तुम दोनोंने उसे वहां जाकर समझाया नहीं? हाय यह क्या हो गया! (गिरकर बेहोश हो जाती है।)

कर्मकार—(सचेत कर) क्या करें सेठानीजी! हम तो बहुत कोशिश करते हैं मगर अनंगलिका उन तक पहुंचने ही नहीं देती, ऊपर ही ऊपर बातें बनाकर टाल देती है। कहिये सौदागरोंको क्या जवाब दिया जाय।

गुणभद्रा—खजानेमें रुपया है या नहीं?

कर्मकार—नगद रुपया तो नहीं है, हां, जवाहरात जरूर है।

गुणभद्रा—(माथे पर हाथ रख) तो जवाहरात ही दे दो भाई, मगर देखो आगेके लिये ठीक बन्दोबस्त करो, मुझे तो लक्षण अच्छे प्रतीत नहीं होते। हाय विधाना! तूने क्या किया? मेरी ये क्या दशा कर दी? (रोती है)

कर्मकार—(बाहिर सौदागरोंसे) अच्छा भाई! कैसमें इस समय रुपया नगद तो नहीं है, यदि अभी लेना है तो जवाहरात पचास हजारका ले जाइये अन्यथा कल आइये। (कर्मकार पचास हजारकी जवाहरात देकर और उन दोनोंके हस्ताक्षर करा लिया करता ही है कि इतनेमें तीन दुकानदार और चौथा अनङ्गतिलकाका नौकर यमदण्ड आकर कर्मकारसे रुपयोंके लेनेकी कह रहे हैं। तीनों दुकानदारोंका बिल ढाई लाखका है और यमदंड चिट्ठी एक लाखकी हुंडी दिखाता है।

कर्मकार—(भीतर आकर सेठानीजीसे) सेठानीजी सा० ! तीन दुकानदार अपना अपना बिल सब ढाई लाखका लेकर आये हैं और साथमें अनङ्गतिलकोका नौकर यमदंड एक लाख-की चिट्ठी जुदी दिखा रहा है, कहिये क्या करूं ? इतने रुपयोंकी तो अब रात भी न होगी। (सुनकर गुणभद्रा बेहोश हो जाती है)

गुणभद्रा—(होशमें आकर) क्या करूं भाई। मुझे तो कुछ भी नहीं सूझता ? जो तुम्हें सूझे वही करो।

कर्मकार—क्या करें सेठानी साहिबा, खजाना बिलकुल खाली हो गया।

गुणभद्रा—(बड़े दुःखसे)

हाय ! खाली हो गया क्या ? हाय खाली हो गया।
करोड़ों रुपयोंका हा ! भंडार खाली हो गया ॥
लुट गई मैं, हे प्रभो ! हा ! सब तरहसे लुट गई।
क्या करू ? मेरी दशा हा ! आज कैसी हो गई ॥

(रोती है और उसके साथ चन्द्रप्रभा भी रोती है)

कर्मकार—रोनेसे क्या होयगा अब धैर्य धरना चाहिये
दुःख विपदोंमें न तुम्हें हताश होना चाहिये ॥
धैर्य धरो शायद दिन पलट जांय।

गुणभद्रा—भाई। अब दिन क्या पलटेंगे ? भाग्यमें यही बदा था कि मैं घर घरकी भिखारिन बनकर महान दुःखोंको भोगूं। हाय काल ! तू मुझे क्यों नहीं उठा ले जाता, तू क्यों मुझे अधिक दुःख दिखानेके लिये जीवित रख रहा है।

कर्मकार—सेठानीजी! मैंने एक युक्ति सोची है, उससे बहुत कुछ काम निकल सकता है। मालूम होता है अनंततिलकर मणिभद्रसे हस्ताक्षर करा कराकर बाजारमें लाखोंका माल मगा रही है सो इसके रोकनेके लिए मैंने एक तजवीज सोची है कि एक ऐसी घोषणा फिरा दूं कि जिससे कोई भी फिर मणिभद्रके हस्ताक्षरी बिलको पास न कर सके। इसमें आपकी क्या राय है?

गुणभद्रा—भाई! इस समय मुझे भले बुरेका कुछ भी ख्याल नहीं है। मैं तुम्हें मणिभद्रके बराबर समझती हूं। जैसा तुम्हारा समझमें आवे करो मुझे सब मंजूर है। (सुनकर कर्मकार बाहिर चला जाता है)

कर्मकार—(दुकानदारोंसे) भाइयो! तुम क्यों मणिभद्रके नाम माल देते हो! वह बागी हो गया है, वेश्याके फंदमें फंस गया है, उसके हस्ताक्षरोंका बिल पास नहीं होगा।

लक्ष्मीचन्द—तो हमको क्या मालूम था कि वह बागी हो गया है? क्या तुमने पहिले हमारे पास ऐसी सूचना भेजी थी? अगर ऐसा था तो तुम्हें हमारे पास पहिलेही सूचना भेज देनी थी।

कर्मकार—तो अब भेज दी जायगी।

लक्ष्मीचन्द—भेज देंगे तो हम लोग आगेसे माल नहीं देंगे। मगर हमारा पहिला हिसाब तो चुकता कर दीजिये, उसमें क्यों गोलमाल कर रहे हैं।

यमदंड—और मुझे भी एक लाख रुपया और दीजिये, यह लीजिये मणिभद्रकी चिट्ठी (चिट्ठी दिखाता है)

कर्मकार—(चिट्ठी लेकर) जा, कह दे; कि अब खजानेमें एक रुपया भी नहीं है। आगेसे एक पैसा भी न मिलेगा।

लक्ष्मीचन्द—अरे भाई! इसे नहीं तो हमारा रुपया तो जल्दी दो। हम लोगोंको माल छुड़ाने स्टेशन जाना है।

कर्मकार—अच्छा; आज तो आप लोग जावें, कल हम आपके इन बिलों पर विचार करेंगे।

लक्ष्मीचन्द—कल रुपया नगद तयार रखना, ऐसा न हो कि फिर आनेके लिये टालम टूल कर दो (सब सेठों तथा यमदण्डका चला जाना।)

कर्मकार— (मोदर सेठानीजीसे) मैं दुकानदारोंको तो कल का नाम लेकर विदा कर आया। अब कल एक ऐसी घोषणा फिरानेका विचार है कि "सुभद्र सेठका पुत्र मणिभद्र बागी हो गया है, वह वेश्याके यहां रहता है। उसके नामसे जो कोई रुपया या माल वगैरः देगा उसका भुगतान नहीं दिया जायगा" इत्यादि।

सुभद्रा—हाय! मैं पापिन सब तरहसे लुट गई हां! लुट गई।
धनसे जनसे सब तरहसे दुखी मैं अब हो गई॥
पतीका दुख था क्या अब पुत्रके गममें पड़ी।
तड़फड़ाऊं देख हालत अपनी मैं दुख भरी॥

हाय ! मैंने बड़ा बुरा किया जो अपना पुत्र वेश्याको सौंप दिया। यहां रहता तो धीरे धीरे सुधर जाता मगर मैं क्या जानती थी कि यहां तक अवस्था पहुंच जायगी। आजकल दिनेश भी नहीं आता। क्या वह भी मणिभद्रके लानेकी कोशिश नहीं करता? (सेठानी रोती है और साथमें चन्द्रप्रभा भी रो रही है)

कर्मकार—धैर्य धरो, सेठानीजी ! रोना बन्द करो, कर्मोंका उदय अनिवार्य होता है, वह रुक नहीं सकता। आप समझदार होकर भी यह क्या कर रही हैं।

गुणभद्रा—ठीक कहते हो ! मगर क्या करूं ? अपनी भूल पर मुझे, रुलाई आती है कलेजा टूटता है, लेकिन अफशोस है कि जान नहीं निकलती।

कर्मकार—मैं अभी, मुनादी फिराता हूं और कोशिश करता हूं कि यह मामला सुधर जाय। मुनादीवाला अभी तक नहीं आया क्या कारण है ? (मुनादीवालेका प्रवेश)

मुनादीवाला—जी हजूर ! यह मुनादीवाला आपकी सेवामें हाजिर है। कहिये, क्या आज्ञा है ?

कर्मकार—जाओ और सारे शहरमें यह मुनादी फिरा आओ कि "सुभद्र सेठका पुत्र मणिभद्र बागी हो गया है, वह वेश्याके यहां रहता है, जो उसके नामसे कोई रुपया या माल वगैरः देगा उसका मुगताव नहीं दिया जायगा" सुना।

मुनादीवाला—क्या सुभद्र सेठका पुत्र मणिभद्र बागी हो गया है ?

कर्मकार—अबे नहीं, बाघ नहीं 'बाघी' होगया है

मुनादीवाला—हुजूर! मैं ये संस्कृत और फारसी नहीं पढ़ा हूं। अच्छा, जरा अबकी एक बार और तो कह जाइये। (कर्मकार फिर कह देता है और मुनादीवाला उसे रट लेता है बाद धीरे धीरे सारे शहरमें वक्त मुनादी फिरा देता है) मुनादी सुननेके बाद ही दौलतराम, लक्ष्मीचन्द आदि पांच सेठ आते हैं। कर्मकारको बुलाते हैं)

कर्मकार—(सेठानीसे) मालूम होता है ये लोग मुनादी सुनकर ही आये हैं। अच्छा मैं जाकर देखता हूं कि क्या मामला है? (बाहिर आकर) क्यों आप लोग सबके सब क्यों आये हैं?

लक्ष्मीचंद—आपने रुपयोंके देनेका कल वायदा किया था न; कि आप लोग अपना रुपया कल लेजाना। सो दीजिये और देरी न कीजिये।

कर्मकार—कलकी कहा था तो कल देंगे आज आप लोग क्यों आये हैं?

लक्ष्मीचंद—ऐसे तो कल कभी भी न आयगा। क्या आप दिल्लगी कर रहे हैं कि रुपया देते हैं?

कर्मकार—दिल्लगी तो आप लोग ही कर रहे हैं जो अपनी बात पर कायम नहीं हैं।

दौलतराम—आपको रुपया देना है या नहीं?

कर्मकार—क्यों नहीं? रुपया लेना हो तो कल ले जाना, नहीं तो जो तुम्हें सूझे वह करो।

दौलतराम—व्यर्थमें झगड़ा करो तुम नतीजा अच्छा नहीं।
राह वैर-विरोधका बढ़ना सुनो अच्छा नहीं॥
नालिश करें हम कोर्टमें बदनाम होवोगे तुम्हीं।
सेठके शुभ नाममें बट्टा लगावोगे तुम्हीं॥

हम लोगोंने बड़ा पक्का काम करके रुपया दिया है। देखिये—
(सब सेठ मणिभद्रके हस्ताक्षरोंके तमस्सुक दिखाते हैं)

कर्मकार—जाइये सरकारमें करना जु हो कर लीजिये।
डर दिखाते हो किसे बस, राह घरकी लीजिये।

लक्ष्मीचंद—तो रुपया न दोगे?

कर्मकार—समझ लो, न देंगे।

लक्ष्मीचंद—अच्छा तो हम दूसरी तरहसे रुपया निकाल लेंगे (कहकर सभी सेठ चले जाते हैं इधर कर्मकार भी चला जाता है) [यवनिका पतन]

अंक दूसरा—सीन चौथा।

इजलास-कचहरी।

जज वकील दुकानदार लक्ष्मीचन्द दौलतराम तथा दिनेश आदिका बाकायदे खड़े बैठे नजर आना।

द्वारपाल—(सेठ दौलतरामको बुलाकर और मुचलका सटाकर) कहिये क्या बात है? सच सच बयान कीजिये झूठ न बोलिये।

दौलतराम—हमारे यहाँसे माल तथा नगद रुपया पन्द्रह हजारका मणिभद्र सेठके यहां गया है। अब माँगने पर नहीं दिया तब आपके यहां फिराद की है।

वकील—क्या इसका आपके पास कोई सबूत है? (मुन्शी सब नोट कर लेता है)

दौलतराम—क्यों नहीं? हमारे यही खातेमें उस मितीमें रकम नामे पड़ी है, जो लेगया है उसके हाथके हस्ताक्षर तक हैं।

वकील—और भी कोई प्रमाण है?

दौलतराम—हां, मणिभद्रके खुद हस्ताक्षरोंके चिठ्ठ मौजूद हैं। हजूर हम सब सच कह रहे हैं।

वकील—किसकी मारफत तुमने माल तथा नगद रुपया दिया है, क्या मणिभद्र खुद ले गया है?

दौलतराम—नहीं, मणिभद्र खुद नहीं ले गया है उसके गुमास्ते तथा नौकर आदि लेगये हैं और हमेशासे ऐसा ही होता है। हमारा खाता वर्षोंका है पहिले बहुत सी रकम चुकादी है मगर अभी इधर छह माहका चिठ्ठ कोई भी नहीं चुकाया है।

वकील—अच्छा हम आपका वहिवट देखना चाहते हैं।

दौलतराम—लीजिये न, देखिये इससे आपको सब मालूम हो जायगा। (वही खाता देता है और वकील देखता है)

वकील—(देखकर) दिनेश कौन है?

दौलतराम—मणिभद्रका यही तो कर्त्ता-धर्त्ता है।

वकील—(द्वारपालसे) दिनेशको हाजिर करो (द्वारपाल दिनेशको बुलाता है और वसी तरह मुचलका आदि भरवाता है)।

वकील—क्यों दिनेश ? दौलतरामका माल व नकदी तुम्हारे मारफत आया है । ये वहीमें तुम्हारे ही दस्तखत हैं न ?

दिनेश—दस्तखत तो मेरे ही हैं मगर क्या यह सारा माल मेरे घरपर ही थोड़े आया है ?

वकील—तो किसके घर पर आया है ?

दिनेश—मणिभद्रके । हजूर जैसी सेठजीकी आज्ञा हुई हम उसी मुताबिक माल मंगाते गये ।

वकील—इन सौदागरोंका रुपया जो मांग रहे हैं ठीक है न ?

दिनेश—ठीक तो है मगर इनको फिर माल नहीं देना था ।

वकील—ये बात हम अभी नहीं पूछते हैं । अभी हमको यही पूछना है कि ये रुपया ठीक है या नहीं ?

दिनेश—रुपया तो ठीक ही है ।

वकील—(द्वारपाल)यमदण्डको हाजिर करो । द्वारपाल यमदण्डको पुकारता है उसीप्रकार सबमुचलके आदि भराता है ।

वकील—(यमदण्ड से) क्यों भाई ! क्या तुम इन दुकान वालोंके यहांसे माल ले गये हो न ? देखो ! ये वहीमें तुम्हारे ही अंगूठेकी निशानी है न ?

यमदंड—(देखकर) निशानी तो मैंने की थी और कभी २ माल भी ले गया हूं मगर ये तो सारी बही मेरे अंगूठेसे रंगी दीखती है, क्या मैं इतनी बार आया था ?

वकील—ये तो तू जाने। क्या तेरे पास नोट बुक है, जिसमें तूने मिती वार आना जाना लिख रक्खा है।

यमदंड—हजूर यदि मैं पढ़ा हुआ ही होता तो क्या ये दश पांच रुपये की ही नौकरी करता? क्या आप सरीखा कुर्सी पर बैठ मैं भी हुकूमत न करता?

वकील—मालूम है। ये इजलास है दिल्लगी-घर नहीं है। जो बात पूछें उसीका जवाब दो ज्यादे कहने की जरूरत नहीं है। तू माल लेने आता था या नहीं?

यमदण्ड—आता था। (मुन्शी सब इजहार लिख लेता है)

वकील—(दिनेश से) जब तुम इनका देना कबूल करते हो तब हिसाब चुकता न करनेका क्या कारण है?

दिनेश—इनका रुपया इनको दे दिया गया है। बादमें इनका माल आया है उसके देनदार हम नहीं हो सकते।

वकील—क्यों?

दिनेश—हमारी तरफसे मुनादी फिरा दी गई थी कि आज से मणिभद्रके हस्ताक्षरका बिल पास न किया जायगा कारण कि वह बागी हो गया है। वेश्याके फन्देमें फंस गया है। (मुन्शी सब लिख लेता है)

वकील—(जजसे) हजूर! तब तो इन सौदागरोंका दावा करना मिथ्या प्रतीत होता है। इन्हें माल नहीं देना था।

वकील—(दौलतराम वादिका, दिनेशसे) आपने मुनादी कब फिराई थी।

दिनेश—आज दो रोज हो गये।

वकील—(वही दिखाकर) और देखिये इन लोगोंका दिया हुआ माल बहुत दिन पहलेका है। इन्होंने मुनादी सुनकर आज दो दिनसे कुछ भी माल नहीं दिया है। सब माल पहिलेका है। अतः इन सौदागरोंका दावा साबित हजूर ठीक है। क्या ये माल पहिलेका नहीं है?

दिनेश—जब वही ही कह रही है तब मेरी कौन सुनता? और कहूं भी तो क्या सच्चा माना जायगा?

वकील—कहीं झूठ बात भी सच्ची हो सकती है। (जजसे) देखिये हजूर दिनेशका पक्ष कितना कमजोर है। अब आप इन्हें योग्य फैसला सुना दीजिये (जज कानूनके मुताबिक फैसला दे देता है। फैसला लक्ष्मीचन्द दौलतराम आदि सेठोंका रुपया जो मणिभद्रकी सही एवं गुमास्तों और नौकरोंकी मारफत माल तथा नगदीरूपमें गया है वह ठीक है। मणिभद्र एक प्रतिष्ठित पुरुष है इसलिये प्रथम पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट जाकर इनके रुपये दे देनेको कहै। यदि मणिभद्रके मुनीम-गुमास्ते इन सौदागरों का हिसाब चुकता न करें तो मणिभद्रकी तमाम जायदाद मकानात वगैरः नीलाम कर दी जाय और इन लोगोंका रुपया चुका दिया जाय।

दिनेश—(स्वगत) भाग्यका तारा चमकते क्या लगे कुछ देर है।
चन्द रोजोंमें हुआ मेरे रुपोंका ढेर है॥
बिना चालोंबाजसे सुख किसीको मिलता नहीं।
सरलताके धारनेसे काम कुछ बनता नहीं॥

यदि मैं यह चालबाजी न चलता और वकील आदिको पहिले ही से न मिलाता तो क्या सहज ही यह मामला इस रूपमें हो जाता? अब मैं नीलाममें मणिभद्रकी हवेली आदि ले लेता हूं। दूसरा कौन है जो मेरे सामने ले सके। पश्चात् किसी उपाय द्वारा उसी चन्द्रप्रभाको लाकर उस हवेलीमें रहूगा और जिन्दगीका आनन्द लूटूंगा। ऐसा कौन है जो दिनेशसे बाहिर हो! यह सब रुपयोंका मेल जोल है। अभी तो चलूं और मणिभद्रका सारा माल मेरे ही हस्तगत हो, जाकर ऐसा उपाय करूं (कहकर दिनेशका चला जाना वकील और दूकानदारोंका भी चला जाना)। [यवनिका पतन]

अंक दूसरा—सीन पांचवां।

मणिभद्रका मकान।

कर्मकार गुणभद्राको समझा रहा है।

कर्मकार—सेठानी साहब! आप क्यों सोच कर रही हैं? भवितव्य बलवान होता है उसके सामने किसीकी नहीं चलती।

गुणभद्रा—तो क्या तुम्हारे समझाने पर भी मणिभद्र नहीं आया? क्या तुमने यहांकी सब हालत उसे नहीं बताई? वह हम लोगोंको बिलकुल भूल गया!

कर्मकार—सेठानीजी साहब! आनेकी बात तो जाने दीजिये वे मेरेसे अच्छी तरह बोले तक नहीं। न मालूम उनके साथ उस वेश्याने क्या वशीकरण कर दिया है। उनके व्यवहारसे

यह साफ झलकता है कि वे इस घरको बिलकुल भूल गये हैं और उसे ही अपना घर समझते हैं।

गुणभद्रा—क्या मुझे भ्रम हो गया था जालमें तुम पड़ते।
साँच साँच कहो मुझे क्यों दुःख दे तरसावते॥
हाय मेरे की क्या हालत इस दशामें होगई।
हाय बेटा! हाय बेटा!! मा तुम्हारी रो रही॥
अपनी इस नादान माको क्या दरश नहीं देवगा।
हम अनाथिनियोंका बेटा! नाम अब को लेवगा॥

हाय! बेटा!! एक बार तो आकर इन दुखियाओंको दर्श देजा। (रोती है और चन्द्रप्रभा भी गुणभद्राके पगोंमें अपना शिर रख बिलख रही है उधर कर्मकार भी यह दृश्य देख खड़ा खड़ा रोरहा है)

कर्म०—उठो! सेठानी उठो! इस तरह मत बेजार हो।
कर्मकी गतिकी तरफ देखो न तुम गमख्वार हो॥
फिर कहूँगा जायकर समझाऊँगा मणिभद्रको।
बनेगा लाऊं जहांतक पुत्र तुम मणिभद्रको॥

चलो और कुछ जलपान करो तुम्हें इसी तरह बैठे साठ आठ घंटे होगये।

गुण० (रोती हुई) खायापीना और सोना मुझ अनाथिनका गया।
पुत्रके पीछे हमारा सब गया हा! सब गया॥
हाय! अपनी यह दशा लखि हृदय मेरा धड़कता।
अरे बैरी कर्म! तोकूं भी तरस नहिं आवता॥

(बाहिरसे आवाज आती है, कर्मकार! कर्मकार!)

कर्मकार—(आवाज सुनकर) सेठानी साहब ! मुझे कोई बुला रहा है। जाकर देखूं कौन है, आप सावधान हो बैठ जाइये। (बाहिर आकर पुलिस तथा दौलतराम आदि सेठोंको देखकर बड़े तरद्दुदमें पड़ जाता है)

पुलिस सु०—(कर्मकारसे) क्या तुम्हीं सेठ मणिभद्रके गुमाश्ते कर्मकार हो।

कर्मकार—जी हां, मैं ही सेठ मणिभद्रका गुमाश्ता कर्मकार हूं।

पुलिस सु०—इन महाजनोंका रुपया जिनका कि तुम्हारे यहां माल आया है क्यों नहीं देते ?

कर्मकार—हमने मना कर दिया था कि मणिभद्रके हस्ताक्षरसे कोई भी माल या नगदी न दें, यह भारी होगया है। मगर इन लोगोंने नहीं माना तब हम क्या करें ? पहिलेका रुपया सब दे दिया गया।

पुलिस सु०—क्या ऐसी सूचना तुमने निकाली थी ?

कर्मकार—हां, ऐसी मुनादी हमने फिरवा दी थी।

पुलिस सु०—कब ?

कर्मकार—कल।

पुलिस सु०—और इनका माल दिया हुआ पहिलेका है। अच्छा, तुम्हें इन सबका रुपया पचास लाख देदेना होगा, बोलो क्या कहते हो ?

कर्मकार—(थोड़ी देर चुप रहनेके बाद) रुपया अभी नहीं है।

पुलिस सु०—अभी नहीं है तो फिर कहांसे कब तक आ जायगा।

कर्मकार—कह नहीं सकते! सेठजी घर पर नहीं हैं। उनके न आने तक हम क्या कह सकते हैं?

पुलिस सु०—तुम्हारे सेठ तो भागी होगये हैं अब वे तुम्हारे घर पर क्यों आवेंगे! अच्छा कहिये वे कब तक आवेंगे?

कर्मकार—मैं कैसे कह सकता हूं।

पुलिस सु०—इनका पहिलेका रुपया किसने चुकाया था?

कर्मकार—मैंने।

पुलिस सु०—तब क्या तुम्हारे सेठजी यहां पर थे?

कर्मकार—नहीं।

पुलिस सु०—अच्छा! अब कहो इतना रुपया दोगे या नहीं?

कर्मकार—रुपया खजानेमें नहीं है।

पुलिस सु०—अच्छा, सुनो तुम्हारे ऊपर नालिश हुई है यदि अभी रुपया नहीं दोगे तो तुम्हारी जमीन, जायदाद, हवेली सब नीलाम करदी जायगी और इनका रुपया दे दिया जायगा।

कर्मकार—(सुनकर सन्न होजाता है) हैं, नीलाम। इस मणिभद्रकी स्टेटका नीलाम!! हाय रे भविष्य! जो तू करे वही थोड़ा है। (कर्मकार रोता रोता भीतर जाता है) सेठानी साहब! जुलम हो गया! हायरे मणिभद्र! तेरी जायदाद हवेली इत्यादि नीलाम होय और तू इधर आंख उठाकर भी देखे तक नहीं, क्या इससे भी दुःख और अफशोश दूसरा हो सकता है?

गुणा०—क्या हमारा भाग्य फूटा वज्र टूटा दुःखका ।
आजसे दारिद्र आया साथ छूटा सुःखका ।
तेरी माँ मरती यहा घरबार भी बिकता यहां ।
अब जुदाई पुत्र तेरी सालती हा ! तू कहाँ ॥

क्या मरते समयमें भी दर्शन न देगा ? क्या अन्त समय में भी मैं तेरे हाथ की लकड़ी तक न ले सकूंगी ? हाय ! हाय !! (रोती है। कर्मकार भी रो रहा है। उधर मकान, जमीन आदि मणिमहकी सब सम्पत्तिका नीलाम हो रहा है। जब सब माल बिक जाता है तब पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टकी आज्ञानुसार कर्मकारके साथ गुणामद्रा और चन्द्रप्रभाको घरसे बाहिर होना पड़ता है। तदनुसार वे तीनों प्राणी रजमरे दुखमें मग्नीक होकर गाना गाते २ चले जाते हैं) गाना तीनोंका—

आ गये दुःख दिवस हाल ये बेहाल भये ॥ टेक ॥
किसको ये मालूम था कि दशा ये आज होयगी ।
अरबोंको सम्पत्ति खोय आज हम वीरान भये ॥ आगये० ॥ १ ॥
राजासे होनेमें रङ्क देखलो न देर लगे ।
पापोंसे ही हम सभी घर घरके भिखारी भये ॥ आगये० ॥ २ ॥
देख लिया भोग लिया दुख हमने अपनी भूलसे ।
'कुंज' अब कुसङ्ग तजो तुम इसके दोष जान गये ॥ आगये० ॥ ३ ॥

(गाते २ तीनोंका चला जाना। इधर दुकानदारों तथा पुलिसका भी चला जाना)

यवनिका पतन। ड्रॉप।
द्वितीयांक-समाप्त।

तृतीयांक

अंक तीसरा–सीन पहिला।

अनंगतिलकाका मकान।

अनंगतिलका अपनी लड़की पुष्पतिलकासे बातचीत कर रही है।
मणिभद्र एक तरफ लेटा हुआ है।

अनङ्गति०—बेटी! अब ये सेठ पुत्र निर्धन हो गया है। कोई भी इसके नामसे बाजारमें माल नहीं देता और न इसके घरसे ही अब एक पैसा आता है।

पुष्पति०—तो मैं क्या करूं मा। कितना रुपया और माल इसके यहांसे हमने मंगा लिया जिसकी शुमार नहीं, मगर अब रहा ही नहीं तब कहांसे दिया जाय।

अनङ्गति०—बेटी! तू मेरे मतलबको नहीं समझी। तेरा कहना ठीक है, लेकिन निर्धनोंसे अपनी प्रीति न होनी चाहिए, निर्धनोंसे प्रेम करना अपने लिए नहीं बतलाया है।

पुष्पति०—क्यों? इतना स्वार्थी होना तो ठीक नहीं है। क्या अपनेको ऐसा विश्वासघात करना मुनासिब है?

अनंगति०—तू आज ये नादान सरीखी बातें क्या कर रही है? क्या अपने पेशेको नहीं समझती, वह कैसा है? अपना तो काम यही है कि एकको छोड़ दूसरेको मूंडें और दूसरेको छोड़ तीसरेकी हजामत करें।

पुष्पति०—मुझे यह पसन्द नहीं है। मैं किस मुंहसे उनसे कहूंगी कि आप यहांसे चले जाइये, मुझसे ऐसा हरगिज न हो सकेगा।

अनंगति०—(स्वगत)

मेरी लड़की इस पुरुष पर एकदम आशक हुई।
छोड़ना नहिं चाहती ये मुखिनी पागल हुई॥
ऐसा करनेसे हमारा काम चल सकता नहीं।
निर्धनोंसे प्रेम करना है हमें अच्छा नहीं॥
अब जुदाईके लिये करना मुझे कुछ यत्न है।
बिगड़ जावेगी अवशि ये जो न करूं प्रयत्न है॥

(प्रगट) अच्छा, बेटी! मैं जाती हूं, तू जहां तक बने इससे अलग होनेकी कोशिश करना। तू क्यों फिक्र करती है? कल इससे भी धनाढ्य और रूपवान पुरुष फँसाऊंगी। मैं समझती हूं कि तू अपना विचार बदल देगी। (अनंगतिलका चली जाती है)

पुष्पति०—(अनंग० के चले जाने पर)

प्रेमको इसने न जाना वह असल क्या चीज है।
प्रेम प्रेमीसे न छूटे यह अनोखी चीज है॥
जान जाना सहज है पर प्रेम जा सकता नहीं।
जुड़गया है प्रेम ये अब अलग हो सकता नहीं॥

चलूं और अपने इस प्रेमीको जगाऊं और जिन्दगीका आनन्द लूं। मुझे इन पचड़ोंमें पड़नेकी जरूरत नहीं। (मणिभद्रके पास जाकर) उठो न प्यारे! देखो दिन कितना चढ़ गया है।

मणिभद्र—(उठकर) मालूम होता है मुझे नींद आ गई थी। तुम यहां पर कबसे खड़ी हो।

पुष्पति०—प्रभो थोड़ी ही देरसे खड़ी हूं, मैंने जगाना उचित नहीं समझा मगर क्या करूं आखिर जगाना ही पड़ा। माफ कीजियेगा।

मणिभद्र—मैं तुम्हें ही स्वप्नमें देख रहा था, अच्छा हुआ जो मुझे जगाकर स्वप्नके फलको प्रत्यक्ष किया। सच कहता हूं मुझे तुम्हारे बिना एक क्षण भी अच्छा नहीं लगता।

पुष्पति०—और मैं भी आपके वियोगमें एक पल भी नहीं बिता सकती। यही कारण आपके जगानेमें हुआ। क्या एकाद गाना सुनेंगे?

मणिभद्र—(हंसकर) सुनाओ न प्यारी! तुम्हारा गाना आदि सुननेके लिये मेरी तबियत कब नहीं होती।

पुष्पति०—सुनिये प्राणनाथ। (गाती है) गाना—

मेरे मनमें प्रेम समाया प्यारे वचसे कहा न जाय॥ टेक॥
हम तुम दोनों प्रेम सने हैं, दिलसे प्रेमी आज बने हैं।
वैरी दुशमन होहि घने हैं, दे न कोई बहकाय॥ मेरे०॥ १॥
प्रेमी अपना प्रेम न छोड़ें, धन गृह रुपया से मन मोड़ें।
सत्य प्रेम तन मनसे जोड़ें, अंत समय तक जाय॥ मेरे०॥२॥
मैंने प्राणाधार बनाया, तुमसे दिलसे नेह लगाया।
यह प्रण मैंने तुम्हें सुनाया, तबियत खुश होजाय॥ मेरे०॥३॥

मणिभद्र—अहा! क्या बात है? प्यारी सुनो, मैं भी एक गाना तुम्हें सुनाता हूं।

सुनो – गाना ।

तेरी सूरत मोहक प्यारी मेरे मनमें गई समाय ॥ टेक ॥ १
हम तुम दोनों प्रेमी हुये, तन मन धन अरपण कर दीये ।
अब यादिक सुख हासिल कीये, अब कैसे बिछुराय ॥ तेरी० ॥
मन अरु तन यह सभी तुम्हारा, तेरी सूरत पर दिल वारा ।
तू मम प्यारी मैं तुव प्यारा, मजा करो सुखदाय ॥ तेरी० ॥ २ ॥
मैं तुझ पर आसक्त हुआ हूं, प्रेम-फन्दमें आन फसा हूं ।
तेरे सुखमें चूर हुआ हूं, वह न कभी विघटाय ॥ तेरी० ॥ ३ ॥

(आहट पाकर गाना बन्द कर देते हैं । सामने अनङ्गतिलका आजाता है ।

अनङ्गति०—(पुष्पतिलकासे) क्यों ? यह क्या हो रहा है ? क्या भोजन करनेकी भी याद नहीं ? क्या मेरे कहने पर ध्यान नहीं दिया ?

पुष्पति०—(नीची निगाह करके) अभी भूख नहीं लगी थी इसीसे जरा देरके लिये बाजा लेकर बैठ गई, चल मैं आती हूं ।

अनङ्गति०—(स्वगत) अच्छा आज तो तू और इसके साथ आनन्द लूटले कल तो इसे मैं इस जहानसे ही उठा दूंगी (प्रगट) जल्दी आना मैं जाती हूं (चली जाती है)

पुष्पति०—(अनङ्गतिलकाके चले जानेपर मणिभद्रसे) प्यारे ! जरा आप बैठें मैं अभी आती हूं (पुष्पतिलका चली जाती है और मणिभद्र इधर उधर टहलता है)

पुष्पति०—(जल्दीसे आकर) लीजिये प्राणनाथ ! भोजन तयार है।

मणिभद्र—क्या भोजनका समय हो गया। अच्छा अब इससे भी छुट्टी लेली जाय। (पुष्पतिलका सुवर्णके पात्रोंमें भोजन परोसती है और मणिभद्र जीमता है। बाद दोनों प्राणी टहलते हैं।

पुष्पति०—(टहलते टहलते) प्यारे ! तुम्हारा रूप बड़ा मन-मोहक है।

मणिभद्र—और क्या तुम्हारा कम चित्त-चोर है ! अच्छा बैठो मैं तुम्हारा भी रूप जगजनमोहक बनादूं फिर देखना कि तुम्हारे आगे रंभा भी शरमाती है या नहीं। (मणिभद्र पुष्पतिलकाको बिठाता है और अपने हाथोंसे नाना प्रकारके वस्त्राभूषणों द्वारा शृंगारित करता है तथा देख खुश होता है। बहुत देर तक इन दोनोंमें बातें होती रहती हैं)

पुष्पति०—चलिये प्यारे। आराम करें। रात्रि अधिक हो गई है।

मणिभद्र—चलो (दोनों प्राणी पासमें पड़ी हुई मनोहर सेजपर सोजाते हैं। यमदंड आता है और दूरसे देखता है)

यमदंड—(पास आकर सोया हुआ जान) ये दोनों सो गये हैं, अब मुझे अपने मालिकके बताये अनुसार अपना काम करना चाहिये। चलूं और इसी तलवारसे आज इनका सिर धड़से अलग करदूं (यमदंड मणिभद्र और पुष्पतिलकाके

पास जाकर और अच्छी तरह सोये हुवेकी परीक्षा कर ज्योंही मारनेका विचार करता है मगर त्योंही उसके दिलमें इस प्रेम-मयी जाड़ीको देख दया आजाती है। उसका हाथ इस युगल-का वियोग करनेको नहीं उठता, यमदंड पीछे हट आता है और विचार करता है)

> जुगल जोड़ी देखि इनकी इन्द्र इन्द्राणी लजें।
> देखि इनकी मोहनी सूरत न मेरे कर उठें॥
> लोभके वश होय मारी ये लिखा अन्याय मैं।
> क्या मनुज करतव्य ये है कुछ विचारा था न मैं॥

मुझे धिक्कार है कि मैंने बिना सोचे समझे इस काममें हाथ डाला मगर अच्छा हुआ जो मुझे अंत समयमें ज्ञान होगया नहीं तो भारी अनर्थ होजाता। तो चलूं और अनंगतिलकाको समझाऊं कि तू इस मनोज्ञ जोडीका वियोग न कर (यमदंड पीछे हटता है और सामनेसे आती हुई अनङ्गतिलकाको देख खड़ा रहता है)

अनङ्गति०—क्यों यमदंड! क्या मामला है? खाली हाथ क्यों आरहे हो?

यमदंड—तुमसे मिलनेके लिये।

अनङ्गति०—क्यों?

यमदंड—जी नहीं चाहता कि मैं ऐसे प्रेमियोंका धाडमात्रके लिये वियोग करू।

अनङ्गति०—क्या बातें करते हो यमदंड?

यमदंड—मैं बात सच सच कह रहा हूं, मुझसे ये काम न होसकेगा।

अनङ्गरति०—देखो यमदंड ! अपनी बात पर विचार करो, मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगी। सच कहती हूं मैं तुम्हें हर तरह फायदा पहुंचाऊंगी।

यमदंड—ठीक है, मगर......

अनङ्गरति०—मगर तगर क्या करते हो समय बहुत नाजुक और कीमती है, लो ये दशहजार रुपयोंके नोट सम्हालो और अपना काम करो। (यमदंडको चुप देख) चुप क्यों हो यमदण्ड ! जल्दी जाकर काम तमाम कर ये पुरस्कार ग्रहण करो।

यमदंड—नहीं; हरगिज नहीं, मुझसे इनके प्राणान्त न हो सकेगा।

अनङ्गरति०—प्राणान्त नहीं, तो क्या इसे तुम जिकड कर सैदासर्म भी नहीं पटक सकोगे ? जल्दी उत्तर दो, मुझे एक एक क्षण वर्षोंके बराबर मालूम होरहा है।

यमदंड—यह हो सकता है। मगर रकम आपको मुझे उतनी ही प्रथम देदेनी होगी।

अनङ्गरति०—इस जरासे कामके लिये भी इतनी रकम !

यमदंड—जरासा काम तुम इसे समझ रही हो, यदि बांधते या लेजाते समय कहीं मुझे कोई पकड ले या येही देखले तो बताओ जेल किसे जाना होगा।

अनङ्गरति०—अच्छा भाई, उतनी ही रकम तू आगे अभी

लेले मगर काम जल्दी कर। (अनङ्गतिलका यमदण्डको दश हजारके नोट गिना देती है और आप एक तरफ खड़ी होकर देखती है कि क्या करता है)

यमदण्ड—(पासमें जाकर) इच्छा तो नहीं है कि मैं इनका वियोग करूं मगर क्या करूं मुझ पै लालच ही जबरदस्ती करा रहा है। (कहकर मणिभद्रकी नाकमें कुछ सुंघा देता है जिससे वह बेहोश होजाता है। फिर पुष्पतिलकाको भी इसी तरह बेहोश करके मणिभद्रका सारा शरीर रस्सीसे जिकड देता है और वहीं निर्दयतासे गठ्ठी बांध पीठपर लाद संडास (पैखाने) में पटक देता है। यमदण्ड और अनङ्गतिलका दोनो चले जाते हैं) [यवनिका पतन]

अंक तीसरा-सीन दूसरा।

दिनेशका मकान।

[दिनेश एक तरफ छिपा हुआ है और चन्द्रप्रभा चिन्तित-दशामें एक ओर खडी आश्चर्य कर रही है।

चन्द्रप्रभा—(आश्चर्य पूर्वक) हैं, यह क्या? मैं अपनेको आज कहांपर खडी पाती हूं? क्या यह स्वप्न है या जग्र?

दिनेश—(छिपा हुआ) नहीं स्वप्न नहीं है। जो तू देख रही है वह सब ठीक है।

चन्द्रप्रभा—(चौंककर) यह कौन है ? आ अभी बाज रह है। हे भगवन् ! यह क्या ? क्या मेरे साथ धोका हो रहा है ? कहां मेरी वह कुटी और कहां यह महल, यद्यपि किसी दिन यह मेरा ही महल था मगर अब तो नहीं रहा तो फिर मैं अपनेको यहां क्यों देख रही हूं ? मुझे यहां कौन लाया ?

दिनेश—(धीरे आता २) कौन ले आया, यह तेरा प्यार तुझे राजरानी बनानेके लिये ले आया। अब तू अपना घर समझ। (पासमें आकर) प्रिये। मुझसे तुम्हारा दुःख नहीं देखा गया इसीलिये ऐसी व्यवस्था करनी पड़ी।

चन्द्रप्रभा—(दिनेशकी तरफ देख) मालूम पड़ता है ये सारी जालसाजी तेरी है। क्या तुझे शर्म नहीं आती कि जो मित्रकी स्त्री माके समान है उसके साथ ऐसा व्यवहार। यह अत्याचार॥

दिनेश—प्रिये ! अब ये ढोंग सारे छोड़ कर प्यारी बनो।
रंज गम को छोड़ अब आनन्दकी भूमी बनो॥
मैं मणिभद्र सरीखा नहीं हूं जो तुम्हें इतना कष्ट दूगा।

चन्द्रप्रभा—(जोरसे)

हो चुका बस हो चुका अपनी जबांको थाम ले।
नहिं तो करनीका नतीजा पायगा तू मान ले॥

मुझे मेरे घर पर पहुंचा दे बस इसीमें तेरी शोभा है।

दिनेश—प्रिये ! क्या ये घर दूसरेका है। मणिभद्र वेश्याके पंजेमेंसे मालूम नहीं निकल सकता। उसका दिल तुम्हारेसे

बिलकुल फट गया है। तब क्या तुमने अपनी जिन्दगी इसी गममें बिताना ठीक समझा है? क्या मुझे तुम गैर समझती हो? देखो मैंने तुम्हारे वास्ते कितना कष्ट सहा है।

चन्द्रप्रभा—बस, जबान बन्द कर और आगे बोलनेका हौसला न कर, जो सतीको सतायगा वह समझ ले भारी दुख उठायगा।

दिनेश—(कुछ आगे बढ़कर)

हे प्रिये! आओ प्रिये! इस हृदयसे आकर मिलो।
मदन रूपी ज्वर चढ़ा उसको दवा बन दुख मलो।
व्यर्थमें झगड़ा करो कुछ सार इसमें है नहीं॥
अन्तमें तुमको प्रिया मेरी अवशि बनना सही॥
तब राजीसे क्यों न बनजाओ?

चन्द्रप्रभा—(हटकर)

खड़ा रह बस, वहीं पर आगे कदम रखना न तू।
इस मेरे पावन बदन पर हाथ तक रखना न तू॥
याद रखना सतीके तू शापसे जल जायगा।
नाम तेरा इस जहांसे छनकमें उठ जायगा॥

दिनेश—(धमका कर) क्या ये ढोंग सीधे सादे नहीं छोड़ेगी? नहीं जानती कि तू इस समय किसके कब्जेमें है? क्या तुझे अपना मददगार कोई दीखता है?

चन्द्रप्रभा—मालूम है, मैं अपने सामने एक नरपिशाचको देख रही हूं। बेवकूफ तू नहीं समझता कि शीलके माहात्म्यसे क्या नहीं हो सकता है?

दिनेश—देख मुझे फिर जबरदस्ती करना होगा। इससे बहतर है कि तू राजीसे मेरी मुराद पूरी करदे वरना पछितानाः होगा।

चन्द्रप्रभा—रे दुष्ट! नीच निर्लज्ज!! तुझे शर्म नहीं आती जो ऐसी घृणा-योग्य बात मुंहसे निकाल रहा है।

दिनेश—क्या तुझे उम्मीद है बचकर यहांसे जायगी।

मान जा क्यों हट करे तू अब न बचने पावगी॥

तू निश्चय समझ ले कि तेरे बचनेका दूसरा कोई उपाय नहीं है।

चन्द्रप्रभा—तुझ दुराचारी अधमका मुझे कुछ भी भय नहीं।

पाप मय तेरे बदनको देख मैं सकी नहीं॥

पापी! मैं तेरे शरीरका स्पर्श नहीं कर सकती।

दिनेश—(आगे बढ़कर) देखूं तेरा कौन सहायक है जो यहां आकर तेरी रक्षा करेगा। (कहकर पकड़ने जाता है मगर चन्द्रप्रभा पकड़ाई नहीं देती)

चन्द्रप्रभा—(कुछ हटकर हाथ जोड़)

है पतित पावन प्रभो। इस ओर तनिक नजर करो।
दुष्ट पापी निर्दयीका कृत्य लखि मम दुख हरो॥ टेक॥
ये दुराचारी। सतावे और तुम देखत रहो।
है बड़ा आश्चर्य स्वामी। क्यों न आज मदद करो॥ १॥
द्रोपदीकी टेर सुन उसका बढ़ाया चीर तुम।
शीलकी रक्षा करी फिर नजर इत क्यों ना करो॥ २॥

सती सीताको उदारा अग्निजल धारा करी ।

तब मेरे इस शीलकी तुम क्यों न अब रक्षा करो ॥ ३ ॥

तब हे स्वामी क्या आप मेरी रक्षा न करोगे ?

दिनेश—(आगे बढ़कर) बस, हो चुकी प्रार्थना ! कर लिया ध्यान ! क्या और कुछ अभी बाकी है ? ले अब मैं सच देखता हू कि तेरी रक्षा परमात्मा करता है या नहीं ? जिसको बुलाना हो बुला ले । मैं सच कहता हूं कि यदि तूने विशेष झगड़ेबाजी की तो मैं इस तलवारसे तेरे सिरको जुदा कर दूंगा । (तलवार दिखाता है)

चन्द्रप्रभा—(क्रोधित होकर) रे नराधम ! तू मुझे मारने का क्या भय दिखाता है ? मुझे तनिक भी डर नहीं है । क्या एक बार मरकर दूसरी बार मरता है ? मैं इस तेरी धमकीसे नहीं घबड़ाती और तेरी सूरत देखनेसे मृत्युको हजार दरजे अच्छी समझती हूं ।

दिनेश—देख मैं तेरेको अभी तक समझा रहा हूं मगर तू नहीं समझती । आखिर अपने कियेका फल पायगी और पीछे लाचार हो मेरे शरणमें आयगी । मैं तुझे यहांसे यों ही न जाने दूंगा, क्यों व्यर्थमें रंगमें भंग डाल रही है ? मेरी बात क्यों नहीं मान लेती ?

चन्द्रप्रभा—रे ! नीच शब्द मुंहसे मत निकाल, तू मुझे कुछ भी कष्ट देले मगर मेरे प्राण-प्यारेके बारेमें ऐसा दुष्ट चिन्तवन न कर । तू मेरी जान अभी ले ले ।

दिनेश—तेरी जान न लूंगा, तुझे तो मैं अपनी प्रेयसी बनाऊगा। हां, यदि तू मेरी बात मंजूर न करेगी तो तुझे कैद कर दूंगा और उधर मणिभद्रको इस जहानसे उड़ा दूंगा। फिर तेरे शीलकी ठोंग देखूंगा कि वह किन्नरोंको उड़ा देती है। बाद बस मैं तेरे ईमानको भ्रष्ट करूंगा और अपने दिली अरमान निकाले बिना हरगिज न जाने दूंगा। इससे चल और बस पड़ी हुई सेज पर मेरे साथ रमा समान क्रीड़ाकर (कह कर पकड़ने जाता है मगर फिर भी चन्द्रप्रभा उसके हाथमें अपनेको नहीं आने देती)

(बिलखे वदनसे) हे दीनबन्धु! दीनानाथ!! आपको छोड़ अब मुझे किसीका भी सहारा नहीं है। (रानी सी हां ईशप्रार्थनामें लीन हो जाती है)

दिनेश—अच्छा अब तू न मानेगी, तब मैं भी तुझे अवस्था पर पहुंचा देता हूं (कहकर ज्योंही चन्द्रप्रभाका हाथ पकड़ना चाहता है त्योंही कर्मकार मय द्वारपालके जल्दीसे आकर दिनेश को धक्का देकर गिरा देता है और द्वारपाल पिस्तौल किये सामने खड़ा रहता है। चन्द्रप्रभा यह दृश्य देख अचम्भितसी खड़ी रहती है।

दिनेश—(पड़ा हुआ)

मै तो पापोंके फंदेमें पड़के मरा न इधरका रहा न उधरका रहा।
हाय! पापा नतीजा बुरा मैं किया न इधरका रहा न उधरका रहा
मुझ पापीने एक सताई सती न इधरका रहा न उधरका रहा॥

मेरा धर्म गया, न विधर्म भया न इधरका रहा न उधरका रहा।
कैसे पाप कटेंगे बड़े न इधरका रहा न उधरका रहा॥ ३॥

अंक तीसरा—सीन तीसरा

अनंगतिलकाका मकान।

मणिभद्रका पैखानेमें पड़े पड़े गाते नजर आना। गाना—

विपतिया कैसो पड़ी मोपै आय॥ टेक॥
वेश्याके वश पड़कर मैं ने, दीना धर्म गमाय॥ विपतिया॥१॥
अगणित रुपया खोया मैं ने, पर अब कौन सहाय॥ वि०॥२॥
बास सहूं तन जकड़ रहा सब, दुःख पड़ा बहु आय॥ वि०॥३॥
कौन सुने दुख आकर मेरा, मिले मुझे कब माय॥ वि०॥४॥
प्राण पियारी मेरी कैसे, काटत दिन बिललाय॥ विपतिया०॥५॥

[गाना खतम होते २ झाड़ू आदि लेकर एक मेहतरका प्रवेश]

कालिया—(टट्टीके पास आकर) हैं, यह क्या बलाय है रे! ऐसा अजब तमाशा तो हमने आज तक कहीं भी नहीं देखा!

मणिभद्र—"मरे बासके मारे" अरे कोई भाई निकाल लो रे, हाय! बड़ी बास आती है, नाक फटी जारही है, सारा बदन चूर चूर हो गया। "मरे बासके मारे"

कालिया—(कुछ पीछे हटकर) अरे कौन है रे इस पैखाने में, भूत है या प्रेत? मुझे तो डर लगता है। (दूसरे भंगीको बुलाता है) कूरा! कूरा!! कूरा!!!

कूरा—(दूरसे) क्या है ? क्या है ? आता हूं।

कालिया—अरे दौड़ रे दौड़। देख तो सही आज इस टट्टीमें कौन भूत बोल रहा है।

(कूरा भी आजाता है। दोनों मिलकर कान लगाकर सुनते हैं)

मणिभद्र—"मरे वासके मारे"

कालिया—(पीछे हटकर) हैं, फिर बोला रे! कौन है रे! जो इस खडासमें बोल रहा है, भूत है या जिन्द ?

मणिभद्र—"मरे वासके मारे" [दोनों फिर पीछे हट जाते हैं]

कालिया—(फिर आकर जोरसे) अरे कौन है ? जो इस प्रकार पड़ा पड़ा कराह रहा है। सच बोल, भूत है या मानव ?

मणिभद्र—अरे भाई। मैं एक विपत्तिका मारा मानव हूं। यहां पड़ा २ कुकर्मोंका फल भोग रहा हूं। कोई तो मरकर नरकोंके दुःख भोगता होगा मैं जीते जीही यहां पर नरक-यातनाये सह रहा हूं। ऊपरसे पटक देनेसे मेरी सारी हड्डियां चूर २ हो गई हैं उनमें भारी दर्द हो रहा है। [भाइयो] मुझे दयाकर निकाल लो, तुम्हारा अहसान मैं आजन्म नहीं भूलूंगा।

कालिया—अरे कूरा! यह तो कोई मनुष्य दीखता है रे। आवाजसे बड़ा गरीब मालूम देता है, चलो इसे बाहिर निकालें और सच्ची घटना मालूम करें।

कूरा—हां भाई। मुझे तो बड़ी दया आरही है, देखो विचारा किस कदर पड़ा पड़ा सिसक रहा है। चलो जल्दीसे इसे बाहिर निकाल लें। (दोनों जने मिलकर मणिभद्रको निकाल लेते हैं और बधनोंको खोल देते हैं)

कालिया—(मणिभद्रसे) क्यों भाई ! तुम कौन हो ? यहां पर आना तुम्हारा क्योंकर हुआ ?।

मणि०-(शर्माकर) क्या बताऊं आपको आना यहा क्योंकर हुआ ॥
आपही अपने पांवोंमें मारना कुल्हाड़ी हुआ॥
करोड़ोंकी सम्पत्ति दे ये रांडसे खिलअत लई।
नाककी यन दुःख भोगे दुर्दशा ऐसी भई ॥

हाय ! करोड़ों रुपयोंका धन इस चुड़ैल वेश्याको खिला दिया मगर जब पैसा पास न रहा तब इस रांडने यहां पटकवा कर मेरी यह दुर्दशा की है। मुझे बड़ा आश्चर्य है कि मैं यहां पर आकर क्यों फँस गया ? न यहां आता और न मेरी ऐसी मिट्टी पलीत होती। धिक्कार है मुझे जो मैंने ऐसे नीच कार्यमें फँस अपनी आवरू-इज्जत पर पानी फेरा तथा इस दशा पर आ पहुँचा।

कालिया—आपके कहनेसे मुझको आज ये मालुम पड़े।
आपही मणिभद्र है मेरा हृदय ऐसा कहै ॥

क्या आपही सेठ सुभद्रके पुत्र मणिभद्र हैं, मैं जानता हूं कि ये मेरा अनुमान गलत नहीं है।

मणिभद्र—(नीची निगाह कर) हां भाई! सच है, मैं ही सुभद्र सेठका कुपुत्र मणिभद्र हूं। मुझ मूर्खने अपने घरकी सती पतिव्रता स्त्रीका परित्याग कर इस चुड़ैलको अपनाया, इसीसे अंतमें यह महान दुःख उठाया। मैं अब घर पर कौन मुह लेकर जाऊं। मुझे लाज आती है और आगे को पैर तक नहीं उठते।

कालिया—क्या आप फिर भी वेश्याके यहां जांयगे ? क्या अभी आपको और शिक्षा लेनेकी जरूरत है ?

मणिभद्र—नहीं भाई! अब मुझे उसका मुंह नहीं देखना है, क्या कोई ऐसी सजा पाकर भी फिर उस ठगिनीसे दोस्ती करेगा ? मुझे अपने पर बड़ी घृणा हो रही है कि मैंने महान अनर्थ किया और बर्षों वहांके कुंगलमें फंसा रहा, घरकी किसी दिन भी याद न की! अब जाऊं भी तो कैसे जाऊं, मुझे बड़ी शर्म आती है। अब मैं घर पर न जाऊंगा और यहीं पर इस कटारसे अपने प्राणोंको न्योछावर कर दूंगा [गर्दनमें भोंकनेके लिये कटार हाथमें लेता है]

कालिया—(जल्दीसे हाथ पकड़)

नहीं ऐसा आपको करना मुनासिब है नहीं।
दोषकी निवृत्ति करनेको मुनासिब ये नहीं॥
योग्य प्रायश्चित्त ले निज आत्म-शुद्धी कीजिये।
इस मेरी लघु वीनती पर ध्यान आप जु दीजिये॥

आपके दोष आपही छूट जांयगे। आप इस आत्म-घातके विचारको दिलसे निकाल दीजिये।

मणिभद्र—क्या करू भाई। मुझे सिवाय इसके और कुछ उपाय नहीं सूझता।

कालिया—तो क्या अपमृत्यु करनेसे आपका इन दोषोंसे छुटकारा हो जायगा ? मेरी समझसे ऐसा करनेसे आपको और विशेष पापका बन्धन होगा। क्या आप नहीं जानते कि आत्म-घात करना कितना बड़ा पाप है ?

मणिभद्र-यह तो ठीक कह रहे हैं मगर......

कालिया—[बात काटकर] मगर क्या आप ऐसा कदापि न करें, मैं कहता हूं कि आपकी आत्मा पवित्र होगी, आप फिर भी पहिलेकी अवस्थासे कई दर्जे आगे बढ़ जांयगे।

मणिभद्र—तब तुम्हारा क्या विचार है ?

कालिया—मेरा विचार यही है कि तुम यह विचार दिल से निकाल दो और अपने कुटुम्बीजनोंसे क्षमाकी याचना करो, फिर दान पुण्य व्रतादि द्वारा इन दोषोंको दूर करो।

मणिभद्र—अच्छा भाई ! मैं तुम्हारा कहना करूंगा और इसी तरहसे इन दोषोंको हरूंगा। मुझे भी तुम्हारे इस समयोपयोगी उपदेशसे बड़ा लाभ हुआ है। मेरा हृदय पटल ज्ञानरूपी दीपकसे प्रकाशित हो गया है।

कालिया—तब मुझे ये अपनी कटार दीजिये और अन्यथा विचार न कीजिये।

मणिभद्र—[कटार देकर] लीजिये ये कटार और मुझे जानेकी इजाजत दीजिये।

कालिया—जाइये, आपका मंगल हो, आपकी आत्माकी उन्नति हो। [मणिभद्र चला जाता है बादमें दोनों सिहतर भी चले जाते हैं]

[यवनिका पतन]

अंक तीसरा—सीन चौथा।

गुणभद्राकी एक छोटीसी कोठरी।

गुणभद्रा उदास बैठी है सामने सूत निकालनेका चर्खा रक्खा हुआ है।

गुणभद्रा—[रंजीदा होकर गाती है]

हाय ! मेरी कर्म तूने ये दशा कैसी करी।
पुत्र तो पहिले गया था ! बहू भी किसने हरी ॥ टेक ॥
क्या बिगाड़ा था बता तेरा जरा आकर सही।
हाय ! दुख ये सहन करते आवती छाती भरी ॥ हाय० ॥
पुत्रकी हालत न मालुम होयगी कैसी बुरी।
लाल मेरेकी मुझे है याद आती हर घरी ॥ हाय० ॥
मैं अकेली रह गई किस दुष्टने ये गति करी।
तड़फती हूं मीन जैसे बिना जलके स्थल परी ॥ हाय० ॥
दीन दुखिया मैं हुई कोई खबर लेता नहीं।
हा ! बहू मेरी गई किस दुष्टके पले परी ॥ हाय० ॥
कर्मका फल भोगना होगा मुझे सारा सही।
सभी दुख सहना पडेगा हाय मति मम किन हरी ॥हाय०॥१॥

हाय ! मुझ अभागिनको आज भी नहीं खाना ! मैं इन दारुण दुःखोंको कैसे सहूं ! क्यों न अपघात करके अपने प्राणों-को त्याग दूं, मेरे जीनेसे क्या होगा ? बहुत कोशिशें कीं मगर मेरे पुत्रकी दशा न सुधरी, जब इतना परिश्रम और उपाय

करने पर भी पुत्र न आया तब अब क्या आ सकता है? हाय! पुत्रका दुःख तो था ही मगर आज यह चन्द्रमाके समान सायबका जानेका दुःख मेरे कलेजेको तोड़े डालता है, न मालूम उस पर कौन कौन सी आपत्तियां आ रही होंगी। उसे दुष्ट पापी रातोंरातमें कौन उठा ले गया! हाय रे कर्मके उदय! तूने मुझे भी अचेत कर दिया। अब एक मात्र कर्मकारका ही भरोसा है सो वह भी बिचारा क्या करे इसने क्या कम मदद दी है? ऐसा कोई भी दिन जाता होगा कि जिस दिन वह आकर मेरी खबर न ले जाता हो। वह भी जानसे कोशिश कर रहा है। परन्तु मैं ये दुख कहांतक सहूं, बस चलूं और अपनेको इस दुनियांसे उठा दूं। (गुणभद्रा कटार उठाकर ज्योंही अपनी गर्दनमें भोंकना चाहती है त्योंही कर्मकार आकर उसका हाथ पकड़ लेता है)

कर्मकार—(सेठानीका हाथ पकड़)

करो क्या आज सेठानी धरो धीरज न मानो दुख।
आपके पुण्यके बलसे फिरेंगे दिन मिलेगा सुख॥

गुणभद्रा—(रोती हुई ऊपरको निगाह कर)

अब मुझे मत तुम बचाओ आज मरने दो मुझे।
बहुत देखा दुःख मैंने अब सतावो मत मुझे॥
किया बहु उपकार तुमने अब न छेड़ो तुम मुझे॥
किया अच्छा अन्तमें दर्शन दिये तुमने मुझे॥

अब मेरेमें शक्ति नहीं जो जिन्दी रह कर इन वज्र समान

दुःखोंको सहन करू। तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है, उसे मैं क्या कभी भूल सकूंगी ?

कर्मकार—नहीं सेठानी साहब। मैंने कुछ भी आपका उपकार नहीं किया है, आप विशेष चिन्ता न करें, समय ठीक आ रहा है, मैंने चन्द्रप्रभाका पता लगा लिया, वह आ रही है।

गुणभद्रा—(चौंक कर) कहां है! (चन्द्रप्रभा और दिनेश का प्रवेश)

चन्द्रप्रभा—(जल्दीसे गुणभद्राके पैरों पर पड़) पूज्य सासू जी। यह चरणसेविका आपकी बहू आपकी सेवामें हाजिर है। यह सब आपके ही पुण्यका प्रताप है जो मैं अपने धर्मकी रक्षा कर सकी हूं।

गुणभद्रा—(छातीसे लगाकर) क्यों बहू ? तेरे पर कौन कौन आपत्ति पड़ीं, तुझे कौन दुष्ट ले गया ? (चन्द्रप्रभा अलग हो जाती है)

दिनेश—(पैरों पर पड़ कर) हे पूज्य मातेश्वरी! मुझ दुष्ट नराधमके अपराधोंको क्षमा करो, मुझ पापी होने इस सती नारीरत्न चन्द्रप्रभाको अपनी घृणित पापिष्ट वासनाओं की पूर्ति निमित्त भारी दुःख दिया है। यद्यपि यह गुरुतर अपराध क्षन्तव्य नहीं है, मगर जैसे इस मेरी पूज्य उद्धारकर्त्रीने मुझ अधमका उद्धार किया है, मेरी पतितदशाको सुधारा है, मुझे अपने सदुपदेशसे एक भारी दोषसे विनिर्मुक्त किया है, वैसे आप भी क्षमा करेंगी ? क्या मेरे गत दोषोंको भूल जायगीं ? (रोता है)

गुणभद्रा—(आश्चर्यसे) दिनेश! क्या तू इस दशा तक पहुच गया? क्या तुझे मेरी इस अवस्था पर भी रहम न आया? मैं क्या जानती थी कि एक मेरे घरका लड़का ही मुझ पर कुठाराघात करेगा।

दिनेश—(रोता सा हो) मा! मैं अन्धा हो गया था, मुझे उस समय अच्छे बुरेका ज्ञान न था। यदि यह सती मेरा उद्धार न करती, मुझे सदुपदेश देकर मेरे पापिष्ठ-हृदयको उज्वल न बनाती तो क्या मैं आज दुनियांमें मुंह दिखानेलायक रहता? बस; मा। मुझे एकबार माफ कर दो, बिना आपकी माफी प्राप्त किये मेरा उद्धार नहीं होगा। मेरी पापिष्ठ-आत्मा शुद्ध न होगी।

गुणभद्रा—अच्छा; दिनेश! बैठो और मुझे अपनी भावी अवस्थापर विचार करने दो, जब इस चन्द्रप्रभाने तुम्हें माफ कर दिया तब मेरी तरफसे भी माफ समझो। (दिनेश एक ओर नीची निगाह कर बैठ जाता है। सामने गाते गाते मणिभद्र दिखाई देता है) गाना—

पाऊंगा कैसे मैं तोकूं मा री॥ टेक॥

कर्म सताया, बहु दुख पाया। तोसे मिलूंगा कैसे मा री॥पाऊं०।
तेरी हालत, अब दिल सालत। क्या मैं देख सकूं तोकूं मा री॥
जीवित होगी कि, स्वर्गमें होगी। मैं तोकूं दीना दुख बहु भारी॥
छाती फाटे, दिल दहलावे। कहां मिले तु सती मेरी प्यारी॥४॥
कुंजन कुंजन, डोलूं वन वन। क्या मैं जीऊंगा बिन महतारी
पाऊंगा कैसे मैं तोकूं मा री॥५॥

(मणिभद्र दूरसे अपनी मा तथा स्त्री आदिको पहिचान लेता है मगर मारे लज्जाके आगे पैर नहीं रहते। वहीं एक तरफ खड़ा रहकर (स्वगत) कौन सा मुंह लेकर मा के पास जाऊं। हाय ! मेरी यह दशा ॥ वहां जाकर क्या कहूंगा ? यहां आनेकी अपेक्षा तो मर जाना ही अच्छा था। (मणिभद्र खड़ा रहता है आगे पीछे नहीं हटता)

गुण०—(कुछ दूर सामने पुत्रको विलखते वदन खाली हालतमें खड़ा देख 'हे मेरे लाल !' कहकर कुछ आगे बढ़ती है कि उधरसे मणिभद्र आकर माताके चरणोंमें गिर फूट फूटकर रोता है। गुणभद्रा भी रोती है, कुछ देर बाद) बेटा ! तेरी यह दशा देख मुझे बड़ा दुःख होता है। हाय पुत्र ! मुझ अभागिनको छोड़ तू कहां चला गया था ? (रोती है)

मणिभद्र—हे पूज्ये ! मुझ दुराचारीकी बात मत पूछ, मुझ कृतघ्नीका नाम न ले। हाय ! मेरी ही वजहसे आज तेरी यह अवस्था हुई है। मा ! मुझे मरजाना था पर मुंह न दिखाना था। (रोता है)

गुणभद्रा—(आंसू पोंछ कर) रोवे मत बेटा ! मेरे लाल ! मेरी आंखोंके तारे ॥ तेरे बिना मेरा दीपक गुल था, चल बेटा रंज छोड़, यह सब कर्मका चक्र था, इसके आगे मनुष्य क्या कर सकता है ? (गुणभद्रा पुत्रका हाथ पकड़ ले आती है)

चन्द्रप्रभा—(पैरोंमें गिर कर) हे नाथ ! मुझ दासी पर कृपा करो, मेरे दोषोंकी तरफ दृष्टि न दो, मुझे अपने कृत्योंपर बड़ा पश्चात्ताप हो रहा है। (रोती है)

मणिभद्र—(बड़े प्रेमसे उठा और छातीसे लगाकर) प्रिये! मुझ अपराधीको क्षमा करो। मुझ मूर्खने तुझ सतीको नहीं पहिचाना, तुझे बहुत दुःखित किया। प्रिये! मेरे दोषों पर ध्यान न दो। मुझे अपने कृत्यों पर रुलाई आती है और......

चन्द्रप्रभा—(रोती हुई सी) प्राणनाथ! इसमें आपका अपराध तनिक भी नहीं है, मेरे ही कोई प्रबल पापोदयसे यह अवस्था देखनी पड़ी है। नाथ! आज आपकी अवस्था मेरी ही भूलसे हुई है, क्या करूं? (रोती है)

मणिभद्र—नहीं प्रिये! मैं अवश्य दोषी हूं! जो तुम सरीखी सती साध्वी स्त्रीको इतना दुःख दिया। हाय। मुझे अपने दुष्कर्मोंका ख्याल करते बड़ा दुःख होता है।

चन्द्रप्रभा—प्राणेश्वर। आपने मुझे दुःख दिया, यह क्या कह रहे हैं? यदि मेरेमें बुद्धि होती तो क्या मैं आपको घर पर ही प्रसन्न न कर लेती? मुझ अशिक्षिताकी भूल हीसे आपको इतना कष्ट पहुंचा है (रोती है)

मणिभद्र—नहीं प्यारी। क्या तूने समझाने और हाव-भावादि दिखानेमें कमी की थी? मगर मुझको इस विषयका ध्यान ही न था। भवितव्य इसी प्रकारका था। प्रिये! रोवो मत, कर्मोदय बलवान है उससे किसीका वश नहीं चलता। (आंसू पोंछता है)

चन्द्रप्रभा—क्या करूं प्राणनाथ! मुझसे कुछ भी न हो सका। अब इस दासीको क्षमा कीजिये और मेरी भूल पर ध्यान न दीजिये।

मणिभद्र—(हाथ पकड़ कर) चलो प्यारो! भीतर चलें और अपनी उन्नतिके मार्गको सोचें (चन्द्रप्रभा और मणिभद्र ज्यों ही जाते हैं त्यों ही दिनेश जो नीची निगाह करके एक तरफ बैठा है मणिभद्रके पैरों पर गिर पड़ता है)

दिनेश—(पैरों पर पड़ा पड़ा) मित्र! मुझे क्षमा करो। मुझ पापीने आपके पीछे भारी अनर्थ किये हैं। आपका सर्वस्व हरण किया है। आपके सारे कुटुम्बको तथा आपको अपरिमित कष्ट पहुंचाया है। कहां तक कहूं मित्र। मुझ पापीका शरीर तक स्पर्श करनेलायक नहीं है। इन दोनों पूज्य माताओंने मुझे माफ कर दिया है, बस! आपकी तरफसे मैं माफी चाहता हूं। (रोता है)

मणिभद्र—(उठाकर) मित्र! यह क्या बात है? मैं तुम्हारी आज यह कैसी दशा देख रहा हूं। तुम क्या कह रहे हो! यह मैं कुछ भी नहीं समझता। मुझे अपने ही दोषोंका भार मारी पड़ रहा है, उस पर तुम्हारी यह दशा देख मुझे और भी आश्चर्य हो रहा है। क्या बात है, बताओ और मेरे हृदयके भ्रमको मिटाओ।

दिनेश—हे मित्र! मैंने ही आपकी सम्पत्तिका बहुभाग नष्ट किया। आपके दस्तखत बना बना कर लाखोंका माल बाजारसे मँगाया, वेश्याके हाथ चार आना गया और मेरे पेट में बारह आना समाया। मेरी ही वजहसे आपकी हवेली जायदाद नीलाम हुई। मुझ दुष्टहीने वकील बेरिस्टरोंको मिलाया

और पीछे आपकी सारी सम्पत्तिका मैं ही मालिक बन बैठा। क्या कहूँ मित्र ! मुझे कहनेमें बड़ी लज्जा आती है, अपने कुकृत्योंपर बड़ी घृणा हो रही है। आपकी सती नारीरत्न चन्द्रप्रभाको मैं ही इस कोठरीमेंसे बेहोश कर ले गया मगर बाहरसे मेरी पूज्य माता ! तूने मेरे कटुक निष्ठुर निर्लज्ज वचनोंको भी क्षमा कर दिया। मुझ नर-कीटको अपने सदुपदेशरूपी अमृतसे सचेत कर दिया। मेरे जर्जरित हृदयको जोड़ा। अहा ! धन्य है देवी ! तुझे धन्य है। हाय ! मुझ पापीको न मालूम उस समय क्या सूझ गया था जो इस अधमाधम कार्यमें प्रवृत्त हुआ। मेरे प्यारे मित्र ! यद्यपि यह अपराध क्षन्तव्य नहीं है तथापि आपको क्षमा कर ही देना होगा, बिना आपके माफ किये मेरी सद्‌गति नहीं हो सकती। (जिसके वदन हो रोने सा लगता है)

मणिभद्र—हैं; यह क्या कह रहे हो, दिनेश। क्या सच कहते हो या मुझे भ्रमजालमें पटक रहे हो ? क्या तुम पागल हो गये हो या मैं ही कोई स्वप्न देख रहा हूं ?

दिनेश—(हाथ जोड़) नहीं मित्र ! इस नराधमसे और अधिक न कहलवाइये। मैं सिर्फ आपसे क्षमा मांगने तक ही यहां ठहरा हुआ हूं। आप अपनी हवेली एवं तमाम सम्पत्तिको जिसमें मेरा एक छदाम भी नहीं है सम्हालिये और मुझे आज्ञा दीजिये जिससे मैं आत्म-कल्याणके मार्गमें लगूं।

मणिभद्र—नहीं दिनेश ! अब हम तीनोंने तुम्हें माफ कर

दिया तब फिर ऐसा विचार तुम्हें नहीं करना चाहिये। मनुष्य की बुद्धि हमेशा एक सी नहीं रहती उसमें र्होबदल होना स्वाभाविक है। मुझे ही देखो न कि……

दिनेश—(बात काटकर, हाथ जोड़) नहीं मित्र! मेरा और प्रकाश्‍ने उद्धार न हो सकेगा। आपको आज्ञा देनी ही होगी।

मणिभद्र—क्या उपस्थित मामला है, हे प्रभो! क्या हो गया।

रंग दुनियाका बदल किस रूप परिणत हो गया॥

हे प्रभो! ये जगत मेरे को तमाशा हो गया।

समझमें आता नहीं कुछ, अहा! ये क्या हो गया॥

मुझे कुछ सूझे नहीं मेरी अक्ल हैरान है।

इस समय मेरी दशाका खुद मुझे नहिं ज्ञान है॥

प्रभो! मुझमें बल हो जिससे मैं मले बुरेको समझूं और आत्महितमें लगूं। क्या करूं? कोई साधन भी इस समय ऐसा नहीं जो हमारे उद्धार करनेमें सहायक हो। (कुछ देरके लिये चिन्तित हो चुपचाप खड़ा रहता है। श्रीज्ञानानन्द ब्रह्मचारीका प्रवेश)

ज्ञानानन्द—क्यों भाई! आज तुम लोग क्यों चिंतत हो रहे हो?

मणिभद्र—(खुश होकर) अहा! धन्य है प्रभो? तुमने हमारे पास इस महात्माको भेज दिया, तुमने हमारी टेर सुन ली। अब हम लोगोंका उद्धार अवश्य हो जायगा। आइये महाराज! बैठिये और हमारी पतित आत्माओंका उद्धार कीजिये। (ऊंचे आसन पर बिठाता है)

ज्ञानानन्द—(बैठ कर) कहो भाई ! तुम्हारा क्या हाल है ? इतने हताश क्यों हो रहे हो ? आपत्ति किस पर नहीं आती ? दोष किससे नहीं होते ? मगर महात्मा वही है जो अपने दोषोंको स्वीकार करता है और माफी मांग अपने कल्याणके मार्गमें लगता है। बताओ तुम लोग किस कारणसे इतने चिन्तित हो रहे हो ?

मणिभद्र—अच्छा महाराज ! सुनिये, मैं सभीका संक्षेपमें हाल निवेदन किये देता हूं। मैं कर्म-संयोगसे घरका त्यागकर वेश्याके यहां वर्षों रहा, सारा धन बरबाद किया, घरके सभी कुटुम्बियोंके दिलको दुखाया। इस मेरे मित्र दिनेशने मुझे विशेष वेश्याके चुंगलमें रखनेका प्रयास किया और इधर मेरे नामसे लाखोंका माल हड़प किया, झूठे मुकद्दमेबाजी करके मेरी तमाम जायदादका नीलाम कराया और खुद उसका मालिक बन बैठा। मेरी सती स्त्रीको यही बेहोश कर ले गया, मगर फिर यह उसीके उपदेशसे सुधरा और आज इस अवस्थामें दीख रहा है। यह मेरा मुनास्ता कर्मकार जिसकी वजहसे हम लोग आज सुधर रहे हैं, मेरा जो परम सहायक है; मेरी स्त्रीकी जिसने रक्षा की, मेरी माताकी गिरी हालतमें भी जिसने साथ न छोड़ा, यह मौजूद बैठा है।

ज्ञानानन्द—ठीक ! मैं आप लोगोंकी सारी घटनायें जान गया मगर मैं पहिले यह जान लेना चाहता हूं इन दोषोंकी निवृत्तिका प्रायश्चित्त तुम लोगोंने अपने दिलोंमें क्या सोचा है। मैं उसीमें कमी बेशी कर तुम्हें प्रायश्चित्त दूंगा।

दिनेश—(उठकर हाथ जोड़) हे महाराज ! मेरा मन अब संसारसे बिलकुल विरक्त हो गया है । मैं इन दोषोंसे छुटकारा पानेके लिये सब घरका त्यागकर उदासीन रह ब्रह्मचारी बनना चाहता हूं, बाद योग्यता मिलने पर उत्तमपद धारण करनेकी अभिलाषा है । मेरी वर्तमानमें जितनी स्थावर जंगम सम्पत्ति है वह मणिभद्रकी है, उसमें मेरा एक छदाम भी नहीं है, इन आपदादके अधिकारी ये ही हैं । अतः अब इनकी सम्पत्ति इन्हें देता हूं ।

ज्ञानानन्द—बहुत ठीक है, तुम्हारा प्रायश्चित्त इसी तरहका होना युक्ति संगत है । मेरी भी राय तुम्हें यही दण्ड देनेकी थी ।

मणिभद्र—हे दयासागर ! मैं गृहस्थके बारह व्रत लेकर व्रती सद्गृहस्थ बनना चाहता हूं । आपकी आज्ञा होय तो मैं व्रती होकर आत्म-कल्याण करूं ।

ज्ञानानन्द—तुम्हारा भी प्रायश्चित्त ठीक है, मगर इसके साथ साथ तुम एक ऐसी संस्था (विद्यालय) खोलो और धार्मिक ज्ञानादि प्रदान कर प्राणीमात्रका कल्याण करो । तभी तुम्हारा प्रायश्चित्त ठीक होगा ।

मणिभद्र—मुझे आपकी आज्ञा मञ्जूर है, ऐसा ही किया जावगा ।

कर्मकार—(हाथ जोड़) श्रीमन् ! मुझसे भी मेरे मालिककी यथार्थ सेवा नहीं हो सकी है, मैं इनके कष्टोंमें जैसी चाहिये वैसी मदद नहीं पहुंचा सका हूं, अतः मुझे भी दण्ड दिया जाय ।

ज्ञानानन्द—भद्र कर्मकार! तुम्हारी प्रशंसा हम सुन चुके हैं, तुम एक परोपकारी कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति हो, तुम्हें जितना भी धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है। मेरी रायसे यदि यह बात मणिभद्रको स्वीकार हो तो तुम्हें ये अपने सब मुनीम गुमास्तों पर निरीक्षक बनावें और विद्यालयका सारा भार तुम्हें प्रदान करें तथा और भी पारितोषिक आदि देकर संतुष्ट करें।

मणिभद्र—वास्तवमें आप ठीक कह रहे हैं, जिसने मुझे सच्चे मार्गपर लगाया, मेरे घरको फिर उन्नत बनाया, मेरी गरीबी हालतमें भी जो साथ आया, ऐसे इस महान परोपकारीके लिये जो न दिया जाय सो थोड़ा है। मैं आजसे इन्हें अपने घर आदि सभी स्टेटका मालिक बनाता हूं। कोई भी काम मैं इनकी राय-के विरुद्ध न करूंगा और विद्यापीठके संचालक भी यही रहेंगे तथा इनकी असीम सेवाके उपलक्षमें मैं अपने दश गांव इन्हें अर्पण करता हूं और आशा करता हूं कि ये मेरी प्रार्थनाको मंजूर करेंगे।

कर्मकार—मैंने कोई भी ऐसा कार्य नहीं किया जो उल्लेखनीय हो मगर आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है।

ज्ञानानन्द—(दिनेशसे) तो क्या तुम हमारे आश्रममें रहना पसंद करते हो। यदि इच्छा हो तो आप मेरे साथ चल सकते हैं।

दिनेश—इससे अधिक और क्या मेरे लिये सौभाग्यदायक बात हो सकती है? मैं चलनेको तयार हूं।

ज्ञानानन्द—या चलिये। (दिनश समासे मित्र छुलकर चल देता है, ब्रह्मचारी भी चले जाते हैं)

[यवनिका पतन]

(परियोंका गानेके लिये आना)

परियां—क्यों वेश्याको सेकर पापी वनो
धन यशको गमावो हो जानके हां ॥ टेक ॥
ये काफिर जाति विरानी, नरकोंकी असल निशानी।
याके फंदेमें फंस क्यों विधर्मी बनो ॥ धन० ॥ १ ॥
करि चिकनी चुपड़ी बातें, हसि २ बल खा करि घातें।
देकें सारी दरब क्यों फकीर बनो ॥ धन यश० ॥ २ ॥
जब धन सारा घटि जावे, तब वेश्या जूत लगावे।
क्यों नाहक पिटो बदनाम बनो ॥ धन यशको० ॥ ३ ॥
सुनि चारुदत्तकी कहानी, जिन किया रूपोंका पानी।
डारे संडासमें, दुःख सारे सुनो ॥ धन यशको० ॥ ४ ॥
भड़्गी चमार धीवरका, मुख लार गहे सब नरका।
ऐसी उच्छिष्ट पातलके भोगी बनो ॥ धन यशको० ॥५॥
जो सत्य प्रेमको चाहो, तो 'कुंज' इसे विसरावो।
तजि खोटी क्रिया शुभचारी बनो ॥ धन यशको० ॥ ६ ॥

(गाते गाते परियोंका चला जाना)

ड्राप।

समाप्त।

'कुंज-ग्रंथमालाके अपूर्व ग्रंथ'

१—जीवंधर नाटक.

२—निर्ग्रंथचतुर्मुनि पूजा.

३—दक्षिण संघाधिपति आचार्य श्रीशांतिसागर पूजा.

४—कन्याविक्रय प्रदर्शन

(छप रहे हैं)

५—सतीजयंती—एक सामाजिक शिक्षाप्रद अति उत्तम उपन्यास।

६—रामणीचातुर्य।

७—कुंजगायन मंजरी—जिसमें नई चालके पद भजन और अनेक सप्तव्यसन निषेधक ड्राप भी हैं।

पुस्तक मिलनेका पता—

कुंजविहारीलाल जैन शास्त्री

प्रधानाध्यापक दि० जैन पाठशाला हजारीबाग।